प्रेम पत्र

प्यारे दोस्त सुब्रामनियम स्वामी जी

सादर प्रणाम

आपकी चीन यात्रा सुखद रही, यह जानकर अत्यन्त संतोष हुआ। इससे भी अधिक संतोष इस बात पर हुआ कि आपको अपने हवाई दौरे पर खर्चा न करना पड़ा। इससे भी अधिक खुशी की बात यह है कि जिस संस्था ने आपका हवाई खर्चा दिया, उसका चेयरमैन कोई दूसरा नहीं, स्वयं श्री अटलबिहारी जी बाजपेई हैं।

परन्तु आपको ऐसा नहीं करना चाहिये था। पहले तो आप अटलबिहारी जी की आज्ञा से चीन गये, मुफ्त में गये और फिर आपने ऐसी बातें कहीं जिन्हें पढ़कर अटलबिहारी जी को संदेह हो गया कि भारत देश का विदेश मंत्री कौन है?

आप तो भली-भांति जानते हैं कि अटल बिहारी जी का स्वास्थ्य अक्सर ठीक नहीं रहता है, उन्हें आराम करने अस्पताल जाना पड़ता है, और फिर उस पर विदेश के देशों के दौरों का बहुत बोझ पड़ा हुआ है। इतनी बड़ी दुनिया है, उसमें इतने सारे देश हैं, भला इतने छोटे से जीवन में इन सब देशों को कैसे खुश रखा जा सकता है। पूरी तरह देखा भी नहीं जा सकता।

आप राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के नेता हैं तो फिर अटल बिहारी जी भी नेता हैं। तो उनसे यह बैर कैसा?

आपकी सेवा में यह सुझाव रखना चाहता हूं कि चीन में जो कुछ आपने खोया या पाया हो उसका कुछ हिस्सा अटल बिहारी जी को दे दीजिये। कहीं ऐसा न हो कि आपको एक बार फिर संसद से बिना "फारवर्डिंग एड्रैस" के गायब होना पड़े।
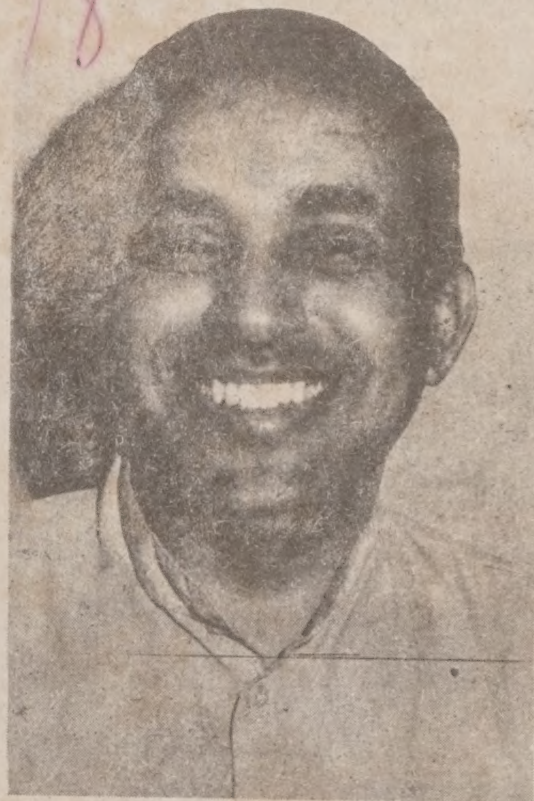
आपका

चिल्ली

मुख पृष्ठ पर

दीवाना

अंक ३२, ५ अक्तूबर से ११ अक्तूबर १९७८ तक
वर्ष : १४

सम्पादकः विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिकाः मंजुल गुप्ता
उपसम्पादकः कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह ज़फर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

चन्दे
छमाहीः २५ रु०
वार्षिकः ४८ रु०
द्विवार्षिकः ९५ रु०

लेखकों से

निवेदन है कि वह हमें हास्यप्रद, मौलिक एवं अप्रकाशित लघु-कथायें लिखकर भेजें। हर प्रकाशित कथा पर १५ रु० प्रति पेज पारिश्रमिक दिया जायेगा। रचना के साथ स्वीकृति/अस्वीकृति की सूचना के लिये पर्याप्त डाक टिकट लगा व पता लिखा लिफाफा संलग्न करना न भूलें।

काका के कारतूस

प्रश्न दीवानों के दीवानी के उत्तर काका हाथरसी के
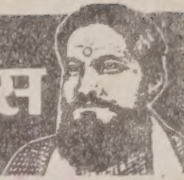
रविन्द्र राजौरा, गिदरवाड़ा (पंजाब)

प्र० . काका जी, कभी आप काकी से नाराज भी हुए हैं ?

उ० : है सारे परिवार पर काकी जी का राज ।
कहां रहेंगे भला हम, होकर के नाराज ।

गनपत प्रसाद वाजपेयी, गुमला (रांची)

प्र० : जलती हुई आग शरीर को जला डालती है तो चढ़ती हुई जवानी क्या करती है ?

उ० : आग जले तो देह को, कर सकती है दाह ।
चढ़े जवानी तो भरें सिसकारी संग आह ।

सुखदर्शन सिंह अरोड़ा, नई दिल्ली

प्र० : कुछ व्यक्ति भविष्य की बातें सोच-सोच कर समय बर्बाद क्यों करते हैं ?

उ० : पांच-वर्ष की योजना बना रही सरकार ।
फिर उनका क्या दोष जो, करें भविष्य-विचार ।

केवल प्रकाश दुआ, काशीपुर (नैनीताल)

प्र० : काकी जब रूठ जाती हैं तो आप कैसे मनाते हैं ?

उ० : रूठ जाए काकी तो काका उसे मनाएं ऐसे ।
चरण सिंह को केन्द्रीय नेता, मना रहे थे जैसे ।

जाहिद अहमद, ग्वालटोली (कानपुर)

प्र० : तुझको अपना बनाने की चाह में अब तक,
हाय हम हो न सके और किसी के हमदम ।

उ० : कहके अपना, हमें सपने में भी अपना न सके ।
फिर भला कौन गधा, प्यार करेगा तुमसे ?

प्रकाश चन्द्र अग्रवाल, पेन्ड्रा, बिलासपुर (म० प्र०)

प्र० : काका जी आपने दाढ़ी-मूंछ क्यों रख छोड़ी हैं ?

उ० : मालूम होता आपकी अक्ल में है छेद ।
दाढ़ी-मूंछ बता रहीं नर-नारी का भेद ।

शिव नारायण शर्मा, कोटा (राज०)

प्र० : काका क्या आप हमारे पैनफ्रेंड बन सकते हैं ?

उ० : यह तो निश्चय हो गया, आप हमारे फैन ।
पैन फ्रेंड बन जाएंगे, भेजो पारकर पैन ।

घनश्याम साहू, अमरावती (महाराष्ट्र)

प्र० : हीरा, कीमती होने पर भी जहरीला क्यों होता है ?

उ० : अधिक कीमती वस्तु का खतरनाक उपयोग ।
चरण सिंह बहुमूल्य हैं, फिर भी डरते लोग ।

जयप्रकाश सिंह, झरिया (बिहार)

प्र० : प्यार की मार से मरने वालों को भगवान की ओर से क्या मिलता है ?

उ० : मर जाए जो यार पर होकर के बलिहार ।
पुनर्जन्म में प्राप्त हो, पुनः उसी का प्यार ।

चन्द्र कुमार बरनवाली (लखनऊ)

प्र० : लड़की और कड़की में क्या अन्तर होता है ?

उ० : लड़की उसको चाहती धन दौलत हो पास ।
कड़की वाले को नहीं लड़की डालें घास ।

रमेश नीलम, दमकझापा (नेपाल)

प्र० : काका के कारतूस का नाम बदल कर काका की झा... रख दिया जाए तो ?

उ० : कारतूस द्वारा कटें, पाप-ताप-संताप ।
झाड़-फूंक हम करें तो उड़ जाएंगे आप ।

रामदेव पंकज, बांद्रा (बम्बई)

प्र० : चरण सिंह और राजनारायण पुनः सत्ता में आ... नहीं ?

उ० : मुरार जी की नीति को जान सके नहिं कोय ।
एक बार पत्ता कटा, क्या जाने क्या होय ।

भूपेश पांडेय, मंदसौर (म० प्र०)

प्र० : काका काकी में कभी लड़ाई हो जाए तो ?

उ० : लड़-भिड़कर तत्काल हम, समझौता कर लेंय,
किसी तीसरी शक्ति को, दखल न देने देंय ।

श्यामलाल एस० व्यास, जोधपुर

प्र० : औरत की लाश पर लाल कपड़ा और मर्द पर सफे...

उ० : दोनों के शव पर अगर, कपड़ा पड़े सफेद,
मुंह ढकने पर क्या लगे, नर-नारी का भेद ।

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें ।

काका के कारतू...
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर...
नई दिल्ली-११०००२

जनता मंत्री नेताओं

के नामों के साथ दीवाना खिलवाड़

नता पार्टी के नेताओं के नामों में थोड़ी-थोड़ी हेरा-फेरी कर उनके नामों को उनके कार्यों के प्रतिबिम्ब बनाये जा सकते हैं—कैसे ? जरा नमूना देखिये ।

चंदावती

हरयाणा जनता पार्टी की इन मुखिया महोदया के पास एक ही काम है या तो किसान रैली के लिए चन्दा इकट्ठा करना या चरणसिंह के जन्म दिवस पर देने के लिये ७७ लाख की थैली के लिये चंदा बटोरना ।

जलेबी लाल

इन मुख्यमंत्री के मंत्रिमंडल में हर महीने कोई न कोई भर्ती होता है या निकलता है । हर शपथ समारोह में जलेबियां खिलाई जाती हैं । इन साहब ने जलेबियों की बिक्री बढ़ाने के सिवा हरयाणा के लिये कोई काम नहीं किया ।
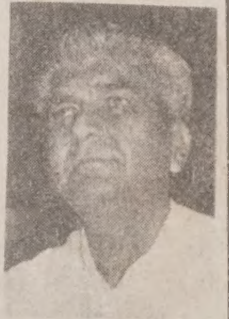
कठपुतली ठाकुर

र के मुख्य मंत्री अफसरों के हाथ की कठपुतली बने हैं ।

फ्रिज लाल वर्मा

टेलीफोन और डाक-तार विभाग का काम इतना ही ठंडा है जितना फ्रिज में पड़ा खाना ।
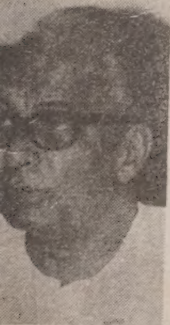
बीजू घटनायक

खान और इस्पात का उत्पादन दिनों दिन घटता जा रहा है ।
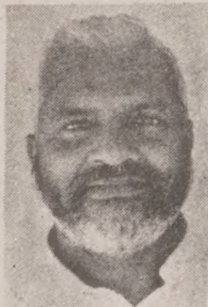
प्रलाप चन्दर चुन्दर

कालिज यूनिवर्सिटियों के दंगे-फसादों को देख प्रलाप करने यानि रोने को जी करता है ।

गृह राज्यमंत्री धानिक

ून और व्यवस्था की हालत बंडल हो गई है ।
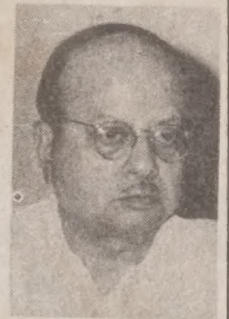
वर्नान्डीस

जार्ज साहब यूं तो कामरेड हैं परन्तु उन्हीं की छत्रछाया तले बड़े-बड़े औद्योगिक घराने फल-फूल रहे हैं । जार्ज साहब वर्ना⋯वर्ना⋯वर्ना⋯की धमकियों के इलावा कुछ नहीं कर पा रहे हैं ।
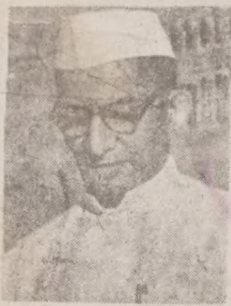
चरण छोड़ जी मोरार जी देसाई

चरणसिंह को छोड़ दिया मोरार जी ने बेसहारा।

नाराज नारायण

राजनारायण चरणसिंह के सिवा सबसे किसी न किसी बात पर नाराज हैं।

जंगजीवन राम

मोरार जी-चरणसिंह के बीच छिड़े जंग से अपने राम को प्रधानमंत्री के रूप में नया जीवन मिलने की आशा।
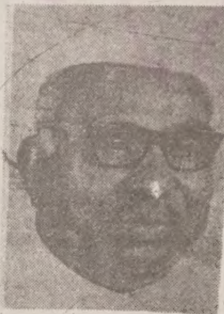
जौधरी चलन सिंह

चौधरी साहब ने कभी एक जगह टिक कर काम नहीं किया जिस किसी कुर्सी पर बैठे काम तो कुछ किया नहीं हां, कुछ अर्सा बाद कोई बहाना ढूंढ़ इस्तीफा देकर चलने का ही काम किया।
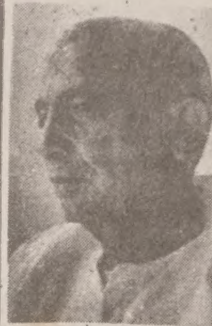
अटकल बिहारी बाजपेयी

बाजपेयी साहब का रुख ऐसा है कि सभी अटकलें लगाते ही रहे कि हजरत दिल से किसके साथ हैं। चौधरी के या मोरार जी के ?

एम. एम. स्टेल

अंग्रेजी स्टेल का अर्थ बासी है जिसमें कोई ताजापन न हो। बजट और आर्थिक नीतियां जो इनकी हैं वह सब जानते हैं उनमें कोई नई बात नहीं है।
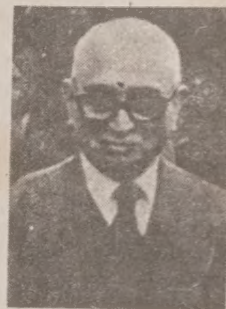
हेमवती नंदन बहुतगुना

सबको पता है कि ये हजरत बहुत गुना हुआ आदमी है।
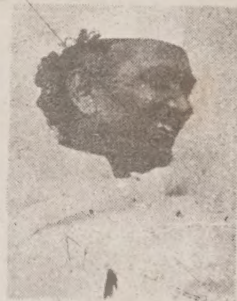
पी रात चन्द्रन

इन ऊर्जा मंत्री के राज में बिजली की कमी के कारण रात छायी है घरों में उजाले के लिए चन्द्रमा का ही सहारा है।

सिबन्दर बख्त

मकान तो है नहीं। अब बेघर लोगों के सामने बन्दरों की तरह पेड़ों पर रहने के इलावा और क्या चारा है ?

मौन धारिया

व्यापारी जनता का गला काट रहे हैं और हमारे वाणिज्य मंत्री साहब मौन धारण किये बैठे हैं।
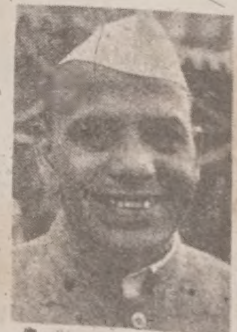
अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

हलाद जसवानी, कृष्ण कन्हैया—मण्डला : ाचा जी, क्या अधिक पैसा मनुष्य को गल बना देता है ?

० : जी हम ने यह सुना है, जो अधिक गल हैं वे पैसा बना रहे हैं।

ालोक गुप्ता—कानपुर : कोई मुझे देख र मुस्कराये तो मैं क्या समझूं ?

० : धर्मेन्द्र, अमिताभ बच्चन, शशि कपूर, ठ भी समझ लीजिए अपने को। इस से न तो बात बनेगी नहीं, पर ज़रा, सड़क के चों-बीच खड़े होकर मत सोचिए। वरना ई गाड़ी जानकी दास या केस्टो मुखर्जी ा देगी आपको कुचल कर।

ीर श्रीवास्तव—मुजफ्फरपुर : एक ड़की से पहचान है जिस का नाम आशा पर उस से अब तक निराशा ही हाथ ी है। क्या करूं ?

: फिक्र न करें, "हाथ लगे हैं," "पांव हैं," वाली नौबत भी जल्दी ही आ ेगी हमें ऐसी आशा है।

वान दास गोकलानी— ब्यावर : चाचा जीवन को मनोरंजक बनाना हो तो क्या ा चाहिए ?

: समाचार पत्रों में यह देखना चाहिए अब किस मंत्री के बेटे की कैसी-कैसी ी खींचने के किस्से छप रहे हैं। इन पर मनोरंजन टैक्स नहीं है सरकार की से।

ाज चावला—पानीपत : पतझड़ आता पत्ते सूख जाते हैं, नये साथी मिलते हैं ाने छूट जाते हैं, क्या यह सच है ?

जी नहीं, हमारे पुराने दीवानों में तो ीवाने बढ़ते ही जा रहे हैं।

ा जैन—बेरमो : बिन्दिया गोस्वामी मालनी जैसी लगती है, तो आप किस ागते हैं ?

किसी से भी नहीं। जैसे बिन्नी कलाथ मिल्स वाले एक डिजाईन की एक ही साड़ी बनाते हैं, ऐसे ही भगवान ने भी एक डिजाईन का एक ही चाचा बातूनी बनाया है।

राम अवतार, शर्मा—मेरठ : क्या मोटू पतलू और चेला राम मेरी शादी पर बैंड बजाने आ सकते हैं ?

उ० : जी हां वे तो ऐसे भी आ सकते हैं जैसे पिछले दिनों तबस्सुम ने रेडियो मे चुटकला सुनाया था। एक बार गांव की कुछ सहेलियां अपनी शादी की बात कर रही थीं, तो एक बोली, मेरी शादी पर तो मिल्ट्री बैंड आया था, बहुत बड़ा। तो दूसरी बोली, मेरी शादी पर पुलिस बैंड आया था। वह भी बहुत बड़ा था। तीसरी बोली, मेरी शादी पर तो मिनी बैंड आया था। नाम का मिनी बैंड आया था, पर था बहुत बड़ा। चौथी बोली मेरी शादी पर तो मोहन बैंड आया था। कितना बड़ा बैंड था और सज-धज के कपड़े पहने हुये थे ? इस पर पांचवी सहेली बोली, अजी मेरी शादी पर तो "हस्बैंड" आया था। वह भी बड़ा था जी। और बड़े सजधज के कपड़े पहने थे उसने। तुमने तो अपने मोहन बैंड का नाम ले दिया, पर नाम ना लूंगी अपने हस्बैंड का।

राजेश खन्ना पप्पू—लुधियाना : डीयर अंकल, आपके पत्र, काका के कारतूस आपस की बातें, आप कहीं भी मेरा पत्र क्यों प्रकाशित नहीं करते ?

उ० : हमें याद है, अभी पिछले दिनों ही तो हमने आपके प्रश्न का उत्तर दिया है। अधिक जल्दी उत्तर पाने के लिए कारनूमों में अधिक मसाला और आपस की बातों में अधिक घोटाला भरने की कोशिश कीजिये।

योगेश कुमार अग्रवाल—डीमापुर नागालैंड : तकदीर और तदबीर में से किसका महत्व अधिक है।

उ० : तदबीर का। जिस से काम लेकर एक नेता दूसरे नेता के लड़के की 'ऐसी फोटो' प्राप्त करने में लगा हुआ है, जो बाप बेटे दोनों की तकदीर चौपट कर दे।

आलोक गुप्ता—कानपुर : जरा इसका उत्तर दीजिये चाचा जी।

सुख में दारू पी रहे, दुख में दिन भर रोए।
सुख दुख दोनों में पिए, वह दारू क्या होए॥

उ० : इस नशे के लिए दीवाना पत्रिका का सूप पीकर देखिये।

कूंडी सोटा पास हो, तो क्यों चिन्तित होए।
घोट के दीवाना पीओ, यह उत्तम दारू होए॥

अनिल गुलाटी 'काका'—रिवाड़ी : अगर आदमी को अपनी मौत का दिन मालूम हो तो क्या हो ?

उ० : दिन मालूम होने के बाद से ही वह अपने को मरा हुआ महसूस करने लगे।

कूपन

आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
8-बी बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली 110002

यदि फिल्म स्टार

जनता पार्टी में एकता लाने के लिये मध्यस्था करें तो ?

उपरोक्त विषय को ध्यान में रख हमने अपने फिल्मी संवाददाता 'चित्र पोपली' को सबसे मिलकर उनके विचार जानने के लिए भेजा। वह वैसे भी दफ्तर में मक्खियां मार रहा था। उसने सभी स्टारर्स के विचार जान कर हमें जो रिपोर्ट दी उसका ब्यौरा प्रस्तुत है।

नोट—जब हमारे पत्रकार ने प्रश्न करना चाहा, 'सत्ता में आने के बाद से जनता पार्टी में झगड़े चले आ रहे हैं उसका क्या हल है ?' तो पत्रकार ने सत्ता में कहना शुरू ही किया था कि जीनत समझी सत्यम् शिवम् सुन्दरम् के बारे में पूछने वाला है। वह फूट-फूट कर रो पड़ी। पत्रकार चला आया उसे रोता छोड़।

जनता पार्टी के सारे नेताओं को एकता के गीत गाते चलना चाहिये।

मैं यह साबित कर दूंगा कि राजनारा[illegible] वास्तव में एक भोंपू है जो एक [illegible] के श्राप के कारण राजनारायण [illegible] गया।

जनता पार्टी के अलग-अलग घटकों में अपनापन पैदा करना होगा। आपस में परिचय पैदा कर प्रेम की खुश्बू फैलानी होगी।
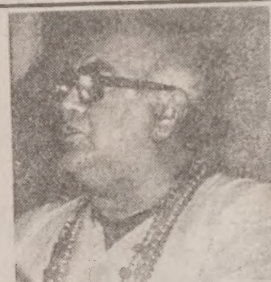
भारतीय लोकदल को जनता पार्टी से तलाक लेकर नये सिरे से यू० पी० में कैरियर शुरू करना चाहिए।

जनता सदस्यों को १९७७ में राजघाट पर ली प्रतिज्ञा याद रखनी चाहिए।

ज्योतिषियों ने राजनारायण और चरणसिंह पर जादू टोना कर रखा है पहले उस जादू टोने का असर दूर करना चाहिये। फिर एकता लाने की कोशिशें सफल हो सकती हैं।

मोरार जी व चरणसिंह दोनों गुटों में कव्वाली के मुकाबलों द्वारा फैसला करवाना चाहिये। इससे मनोरंजन भी होगा।

राजनारायण और चंद्रशेखर को आ[illegible] रजनीश के आश्रम में भर्ती हो [illegible] चाहिए। वहां उनके दिलों के [illegible] धुल जायेंगे।

चौधरी चरणसिंह को अच्छा गाइड नहीं मिला है। इसीलिये वह बाजी हार गये।
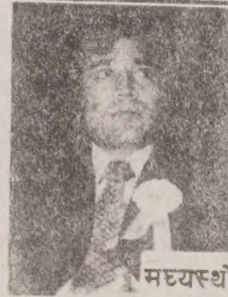
(शत्रु इन्टरव्यू के सारे समय खुद ही अपने बारे में बोलता रहा। पत्रकार को कुछ प्रश्न करने का मौका ही नहीं दिया।)

मध्यस्थों को अपनी कोशिश जारी रखनी चाहिये। फार्मूले फ्लॉप हो रहे हैं तो कोई बात नहीं। कोई न कोई फार्मूला हिट हो ही जायेगा।

जनता पार्टी की छाती में त्रिशूल गढ़ा है। इस त्रिशूल यानि मोरार जी, चरणसिंह तथा जगजीवन राम को निकाल फेंकना है

चरणसिंह और राजनारायण को अपनी मित्रता समाप्त कर नए मित्र बनाने चाहियें। जैसे मैं, डैनी और कबीर से मित्रता तोड़ नए मित्रों की तलाश में हूँ।

राजनीति में कोई जीता कोई हारा चलता ही रहता है। चोर मचाये शोर

जाट नेता चरणसिंह से अन्याय हुआ है। कैबिनेट पद या पार्टी अध्यक्ष पद न सही कम से कम एक इन्क्वायरी कमीशन बनाया जाये जो 'जाट रे जाट तेरे सिर पर खाट' विषय पर गहराई से जांच करे और उसका अध्यक्ष चौधरी चरणसिंह को बनाया जाये।

यह जरूरी है कि पार्टी के सदस्य ईमान-धर्म से चलें। केवल अपना-अपना राग ही न अलापें। उनको पार्टी की समस्यायें सुलझाने में अमित जी से जरूर सलाह लेनी चाहिये।

जनता पार्टी के नेताओं को छोटी-छोटी बातों पर लड़ने की आदत छोड़नी होगी। उन्हें अपने बेटों पर ही नहीं, दामादों पर भी नजर रखनी चाहिए।

इस समय संकट एक ही सूरत में टल सकता है वह यह कि प्रधान मंत्री पद के लिए दूसरा आदमी खोजा जाये। सब कुर्सी की तृष्णा छोड़ दें।

जनता पार्टी के कुछ नेताओं पर पत्नी के प्रति वफादार न होने का आरोप लगाया गया है। पहले पति, पत्नी और वो का झगड़ा सुलझाना जरूरी है फिर दूसरे मतभेद दूर किये जा सकते हैं।

यह तो किस्सा कुर्सी का है। कुर्सी सबके नीचे से हटा लो झगड़ा अपने आप मिट जायेगा।

दशरथ को बम्बई में एक कम्पनी में इंजीनियर की नौकरी मिली थी। उसे रहने के लिये कम्पनी के मैनेजर ने अपनी कोठी 'रचना सदन' बहुत ही थोड़े किराये पर दे दी थी। वह कोठी वर्षों से खाली पड़ी थी। पास-पड़ौस के लोगों का कहना था कि उसमें कोई प्रेतात्मा रहती है

जब दशरथ कोठी में दाखिल हुआ तो लोगों ने उसे भी प्रेतात्मा वाली बात बताई। लेकिन दशरथ हिम्मत करके उसमें रहने लगा। दशरथ ने जैसे ही अपना सामान रखा एक लड़की वहां आई और उसने बताया कि मुझे मेरी बहन ने जो मैनेजर साहब के यहां काम करती है, आपके यहां घर का काम करने के लिये भेजा है। उसने वर्षों से गन्दी पड़ी कोठी को मिन्टों में साफ कर दिया तो दशरथ को बड़ा आश्चर्य हुआ। एक दिन वह प्रेतात्मा दशरथ के सामने आई और उसे पिछले जन्म की कहानी सुनाने लगी—एक दिन स्कूल में एक नाटक हुआ था जिसमें हम दोनों ने पति-पत्नी का अभिनय किया था जो दर्शकों को ऐसा लगा कि वे हमें वास्तव में पति-पत्नी समझने लगे। तुम्हारे पिता मेरे पिता जी के यहां मुनीम थे। उसी रात उन्हें दिल का जबरदस्त दौरा पड़ा और डाक्टर ने उन्हें पूरी तरह से आराम करने को सलाह दी। मेरे पिता जी को मेरी शादी की चिन्ता थी और वे चाहते थे कि मेरी शादी ऐसी जगह हो जहां मुझे कोई दुःख न हो। इसलिए उन्होंने मुनीम जी से आपका हाथ मांग लिया। आपके पिता इसके लिए सहर्ष राजी हो गए क्योंकि मेरे पिता का सारा सामान दहेज में उन्हें मिल जायेगा क्योंकि मैं अपने पिता की इकलौती संतान थी। हमारी विधिवत शादी हुई लेकिन आप इससे खुश न थे। आप किसी और लड़की से प्रेम करते रहे। उस लड़की ने क्या चाल चली? आगे पढ़िये।

'क्यों नहीं रह सकेंगे ? अगर तुम चाहो तो हम रह सकते हैं।'

'कैसे ?'

'मैं तुम्हारे घर में नौकरानी बन कर रह जाऊंगी।'

'नौकरानी ?' दशरथ उछल पड़ा।

'हाँ—इसमें हानि ही क्या है।'

'नहीं-नहीं रानी···तुम मेरे दिल की रानी हो···मैं भला तुमको नौकरानी के रूप में कैसे देख सकता हूं ?'

'दशरथ ! तुम्हारे निकट रहने के लिए मुझे सब कुछ स्वीकार है···मैं कुछ भी कर सकती हूं···लेकिन मैं तुमसे दूर रह कर जीवित नहीं रह सकती।'

'लेकिन···लेकिन रानी वहाँ पर हम मिलेंगे कैसे ?'

'मैं सर्वेन्ट्स क्वार्टर में रहा करूंगी··· तुम रात में वहां मुझसे मिलने आ सकते हो।'

'नहीं नहीं रानी···मेरा मन स्वीकार नहीं करता।'

'दशरथ ! क्या तुम अपनी रानी को अपने आप से दूर रखना चाहते हो ?'

'नहीं···नहीं···'

'तो फिर तुम्हें यह सब कुछ करना पड़ेगा।'

दशरथ कुछ सोचता रहा···फिर ठण्डी सांस लेकर बोला—

'अच्छी बात है—'

'तो फिर कल हम लोग मन्दिर में शादी कर रहे हैं।'

'हाँ—कल शिव जी के उस मन्दिर में।' दशरथ ने कहा और कलाई की घड़ी देख कर घबरा कर बोला, 'अच्छा अब मैं चलता हूं।'

'इतनी जल्दी—।'

'हां—मुझे घर पहुंचना है।'

दशरथ दूसरे दिन शिवजी के मन्दिर में मिलने का वचन देकर चला गया तो थोड़ी देर बाद राकेश आ गया और उसकी ओर देख कर क्रोध से बोला—

'तो तुम उसके साथ मन्दिर में शादी करोगी ?'

'बिल्कुल करूंगी।' रानी मुस्करा दी।

'नौकरानी बन कर सर्वेन्ट्स क्वार्टर में रहोगी ?'

'बिल्कुल रहूंगी।'

'और वह रात को तुम्हारे पास आया करेगा !'

'हाँ—आया करेगा।'

'रानी—!'

रानी हंस पड़ी और बोली—

'तुम बहुत बड़े बुद्धू हो।'

'क्या मतलब ?'

'अरे ! वह सर्वेन्ट्स क्वार्टर में मुझसे मिलने आएगा तो वहाँ तुम भी तो मेरे साथ हो सकते हो।'

'मैं···भला कैसे ?'

'एक गूंगे बहरे के रूप में जो मेरा दूर का रिश्तेदार होगा—जिसका मेरे सिवा कोई रिश्तेदार नहीं।'

'अरे वाह।'

राकेश ने बढ़ कर रानी को गले से लगा लिया और प्यार करता हुआ बोला—

'तुम्हारी तीक्ष्ण बुद्धि का कोई उत्तर नहीं—मेरी रानी···।'

रानी हंसने लगी।

शिव मन्दिर के पास रानी बड़ी बेचैनी से दशरथ की प्रतीक्षा कर रही थी। एकाएक राकेश तेज-तेज चलता हुआ आया और उखड़े हुए सांसों से बोला—

'अभी···आया तो नहीं दशरथ ?'

'नहीं—क्यों ? तुम इतने घबराये हुए क्यों हो ?'

'अरे···बस यह समझ लो···हम लोग बाल-बाल बच गये।'

'क्या मतलब ?'

'हमने महारानी के जिस बेटे के स्थान पर दशरथ को भेजने की स्कीम बनाई थी ना···वह मिल गया है।'

'क्या ?' रानी उछल पड़ी।

'हाँ रानी अच्छा हुआ···मैं समय पर पहुंच गया···तुमने मन्दिर में दशरथ के साथ फेरे नहीं लिए।'

'लेकिन अब क्या होगा ? हमने इस स्कीम पर जो हजारों रुपया खर्च किया है उसका क्या होगा ?'

'अब तो यह हानि होनी थी···सो हो गई।'

'लेकिन अभी हमारे पास आगे के लिए कोई स्कीम भी नहीं।'

'निस्सन्देह···स्कीम तो नहीं है।'

'अब रकम भी तो हमारे पास थोड़ी ही रह गई है।'

'हाँ—।'

दोनों कुछ देर तक सोचते रहे···फिर रानी ने चुटकी बजाई और बोली—

'नहीं राकेश, हमने जो पैसा दशरथ पर खर्च किया है वह हम बर्बाद नहीं होने देंगे।'

'भला कैसे?'

'अरे···दशरथ अब किसी कंगाल बाप का बेटा नहीं है—एक करोड़पति का दामाद है।'

'वह तो है—।'

'अब तुम स्वयं सोचो सेठ रघबर प्रसाद करोड़पति है और रचना उसकी इकलौती बेटी है—अब दशरथ रचना का पति है···सेठ पहले ही से दिल का रोगी है—अगर सेठ के साथ ही रचना भी समाप्त हो जाए तो उसकी छोड़ी हुई दौलत किसको मिलेगी?'

'दशरथ को।'

'दशरथ की पत्नी का उसमें कितना भाग होगा?'

'पूरा—।'

'बस समझ लो—मैं उसी की हिस्सेदार बनूंगी।'

'लेकिन डार्लिंग···इसके लिए तुम्हें दशरथ की असली पत्नी बनना पड़ेगा।'

'ओहो—राकेश डार्लिंग···तुम सोचते क्यों नहीं?' अगर कुछ प्राप्त करना है तो उसके लिए कुछ-न-कुछ बलिदान तो करना ही पड़ेगा—फिर यह तो सोचो कि आज तक हमने जितने 'फ्रॉड' किए हैं उनमें से कम-से-कम दस फ्रॉडों के बारे कानून हमें ढूंढ़ रहा है—किसी-न-किसी दिन तो हमें कानून के हत्थे चढ़ना ही पड़ेगा···लेकिन दशरथ की पत्नी बन जाने के बाद इसकी सम्भावना नहीं रहेगी···और तुम···फिर जीवन-भर मेरे पास ही रहना—अगर एक मूर्ख दोस्त हमारे पंजे में आ जाता है तो हमें इधर-उधर भटकने की जरूरत ही क्या है? और फिर अगर तुम दशरथ से अधिक ही जलते हो तो फिर मैं दो-चार बरस बाद दशरथ को भी रास्ते से हटा दूंगी—और फिर हम दोनों आराम से उसकी दौलत पर गुलछर्रे उड़ाएंगे।'

राकेश कुछ सोचता रहा···फिर ठण्डी सांस लेकर बोला—

'ठीक है तुम जैसा कहोगी वैसा ही होगा।'

'बस तो तुम अब जल्दी से यहाँ से भाग जाओ···दशरथ के आने का समय हो गया है।'

'अच्छा बात है···।'

राकेश थोड़ी ही दूर गया था कि उसने दशरथ को आते देखा···लेकिन दशरथ ने रानी और राकेश को बातें करते नहीं देखा था।

□ रचना ने अपनी कार गली से बाहर छोड़ दी क्योंकि गली छोटी थी और कार अन्दर नहीं जा सकती थी। रचना ने अपने-

आपको संभाला और रूपा के घर की ओर चलने लगी···थोड़ी देर बाद ही वह रूपा के घर के द्वार पर थी। उसने एक बार फिर अपने चेहरे पर प्रसन्नता के भाव उत्पन्न किए और अन्दर प्रविष्ट हो गई। लेकिन दूसरे ही क्षण वह ठिठक कर रुक गई। अन्दर के कमरे से रूपा की दबी-दबी आवाज आ रही थी—

'हटिए भी···आप बहुत शरारती हो गए हैं।'

'ए ले! कभी-कभी तो ऐसी शरारत का अवसर मिलता है—' यह मर्दाना आवाज थी।

'क्या करूं रूपा···हर क्षण गुजरने के साथ मुझे ऐसा लगता है जैसे तुम्हारा प्यार मेरे मन में कई गुना बढ़ गया है—अब तो जी चाहता है कि बस रात-दिन तुम मेरी आँखों के सामने रहो···मैं तुम्हें देखता रहूं···'

'नाथ···!!'

'तुम कितनी अच्छी हो रूपा···तुम कितनी अच्छी हो—कितनी मेरी अपनी हो।'

'आप—आप भी तो कितने अच्छे हैं—इतना प्यार कौन पति देता है पत्नी को।'

'रूपा! मेरा मन तो यह कहता है कि इस धरती पर जितनी बार जन्म लें भगवान् हमें एक-दूसरे के लिए उतारे।'

'नाथ···!'

'रूपा···!'

रचना का पूरा बदन कांप रहा था···आँखों में भाप-सी निकल रही थी···उसे ऐसे लग रहा था जैसे अभी-अभी उसके कण्ठ से तेज सिसकियों की आवाज निकल जाएगी···और वह दूसरे ही क्षण तेजी से पलट कर घर से निकल आई। उसके कदम तेज-तेज अपनी कार की ओर उठ रहे थे। वह अपने मन का थोड़ा बोझ हल्का करने के लिए रूपा के पास गई थी···लेकिन अब उसमें इतना मनोबल नहीं था कि वह रूपा के सामने जा सकती···उसका दिल भर-भर आता था और वह सोच रही थी—

'—दुनिया में ऐसी सौभाग्य-शालिनी पत्नियाँ भी होती हैं?'

'—क्या सच पत्नी को पति का प्यार मिलता है?'

'—हे भगवान्! मैंने क्या पाप किया था जो मेरे भाग्य में ही पति का प्यार नहीं।'

रचना के पाँव तेज-तेज चल रहे थे। अचानक एक घर से एक आदमी निकला जिसने छोटे-से बच्चे को कन्धे से लगा रखा था···फिर उसके पीछे एक स्त्री उतरने लगी ···सीढ़ी पर से उसका पैर फिसल गया और वह गिरने ही लगी थी कि आदमी ने एक हाथ ही से उसे संभाल लिया और स्त्री जान-बूझकर संभलते हुए पुरुष से लद-सी गई··· पुरुष ने कहा—

'संभलकर—मेरे बच्चे की माँ।'

'हटो भी—!'

स्त्री की आँखों में संकोच की लालिमा-सी आ गई और···पुरुष ने हंसकर चलते हुए कहा—

'अच्छा···क्या मैं झूठ कह रहा हूं ?'

'ऐसी बातें क्या सड़क पर कहते हैं ?'

'अरे—मेरा बस चले तो चिल्ला-चिल्लाकर कहता फिरूं।'

'हे राम ! तुम तो बहुत निर्लज्ज हो।'

'अरे वाह ! मजाक को जी चाहेगा तो क्या सड़क पर चलती किसी लड़की से करेंगे ?' पुरुष हंसकर बोला, 'एक' ही चीज तो होती है जो हर प्रकार से अपनी होती है —सच मानो···शादी से पहले एक प्रेमिका को फिल्म दिखाना होती तो खर्चा अलग करते थे—उसकी चापलूसी अलग···सौ नखरे सहते थे···लेकिन पत्नी···वाह क्या चीज है···जब चाहो तैयार करो और लेकर चल दो।'

'अच्छा—सच बताना···अब भी प्रेमिका याद आती है तुम्हें ?'

'पहले-पहल तो बहुत याद आती थी··· लेकिन अब तो हर ओर तुम-ही-तुम हो—जाने क्या चमत्कार कर दिया है तुमने ?'

स्त्री हंसने लगी···रचना को एक बार फिर अपना दिल डूबता हुआ-सा अनुभव होने लगा।

वह चुपचाप कार में सवार हो गई और कार स्टार्ट कर दी—उसका जी चाह रहा था कि वह दहाड़ें मार-मारकर रोने लगे···

रात गहरी हो चली थी—

तारों की निन्दासी आँखें पलकें झपक रही थीं···हवाओं में ऐसा सन्नाटा था जैसे कोई सिसकियाँ ले-लेकर रो रहा हो। रचना को तारों के जुगनू भी आकाश पर चमकते हुए आंसुओं की बूंदें अनुभव हो रहे थे—उसने रात सोने के कपड़े पहन रखे थे···बाल कन्धों पर बिखरे हुए थे···वह चुपचाप खिड़की के पास खड़ी शून्य में घूर रही थी···

इस समय भी वह बैड-रूम में अकेली थी···दशरथ आज भी नहीं आया था···

अचानक रचना की दृष्टि सर्वेन्ट्स-क्वार्टर की ओर उठ गई और वह अनायास चौंक पड़ी। उसका दिल जोर-जोर से धड़क उठा···यह तो···यह तो···वह हैं···। रचना ने सोचा उसने दशरथ को देखा था जो अभी-अभी एक क्वार्टर के दरवाजे से बाहर निकला था···उसके साथ ही एक नौकरानी भी निकली थी। वह नौकरानी द्वार के पास ही रुक गई थी—दशरथ ने उसे बाँहों में भर कर प्यार किया था—और रचना को ऐसे लगा था जैसे उसके पैरों तले से धरती खिसक गई हो—जैसे अचानक आकाश फट-कर उसके ऊपर गिर पड़ा हो···

'यह···यह तो नई नौकरानी है—रानी···'

'—रानी जो अपने गूंगे और बहरे भाई भवंरलाल के साथ इस क्वार्टर में रहती है—'

'—और यह एक नौकरानी के जाल में फंसे हैं ?'

'—इतना गिरा हुआ है इनका चरित्र ?'

सहसा रचना के कानों से दशरथ की आवाज टकराई—

'अच्छा रानी···मैं चलता हूं।'

'जाओगे ? इतनी जल्दी ?'

'रात के दो बजने वाले हैं—किसी ने देख लिया तो व्यर्थ हुल्लड़ मच जायेगा।'

'तुम हुल्लड़ से डरते हो दशरथ ?'

'नहीं रानी···प्यार करने वाले किसी से नहीं डरते—अगर मैं डरता होता तो तुम्हें यहाँ नौकरानी के रूप में रहने की कभी अनुमति नहीं देता।'

नौकरानी के रूप में !—रानी···अनु-मति···!! रचना को ऐसे लग रहा था जैसे धड़ाम से इमारत की सब दीवारें उसके कन्धों पर आ गिरी हों···और वह उनके बीच पिसती चली जा रही हो—

'—तो यह इस लड़की से प्यार करते हैं ?'

'—इन्होंने मुझ से खुशी-खुशी शादी नहीं की ?'

'—इसीलिए सुहागरात को यह रो रहे थे ?'

'—इसके लिए हम दोनों पत्नी-पति होकर भी एक-दूसरे से अजनबी हैं।'

'—इसीलिए इन्होंने इसे नौकरानी बनाकर यहाँ ही ला रखा है ?'

'—इसी के लिए यह रात-भर गायब रहते हैं और मैं अंगारों की सेज पर तड़पती हूं ?'

'—हे भगवान् ! यह सब क्या है ?'

'—कौन-से जन्म के पाप की सजा मिल रही है मुझे ?'

रचना पलटकर बिस्तर पर गिर पड़ी और सिसक-सिसककर रोने लगी।

दशरथ पिछले बरामदे में चढ़ना ही चाहता था कि अचानक उसकी दृष्टि ज्वाला प्रसाद पर पड़ी और वह ठिठककर रुक गया। ज्वाला प्रसाद अन्धेरे में खड़े दशरथ को घूर रहे थे। दशरथ की आवाज कंप-कंपा गई—

'बापू—!'

'कौन है यह लड़की ?' ज्वाला प्रसाद की तेज आवाज गूंजी।

'ज···ज···जी—नौकरानी।'

'मैं इसकी वास्तविकता जानना चाहता हूं।'

'जी—यह वही लड़की है जिससे मैं प्यार करता हूं।'

'और इसीलिए तूने यहाँ इसे नौकरानी बनाकर रखा है।'

'जी हाँ—।'

'गधे हो तुम···

'जी—।'

'अब तुम कोई पड़े-गिरे आदमी नहीं हो—करोड़पति हो—क्या जरूरी था कि उसे नौकरानी बनाकर यहाँ ही लाकर रखो ?'

'जी—मैं समझा नहीं।'

'अरे मूर्ख ! उसे एक फ्लैट खरीदकर उसमें नहीं रखवा सकते थे···?'

दशरथ सन्नाटे में खड़ा हुआ था। ज्वाला प्रसाद ने फिर कहा—

'मूर्ख आदमी ! हर बड़ा आदमी दो-दो, चार-चार औरतें रखता है···लेकिन सबको एक ही स्थान पर इकट्ठा नहीं कर लेता।'

'आप मुझे—समझने में भूल कर रहे हैं···बापू।'

'क्या मतलब ?'

(पृष्ठ ३९ पर)
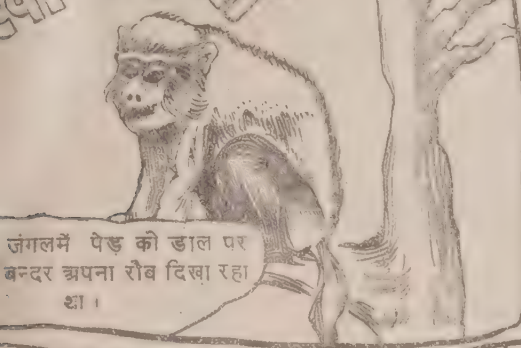
खौं खौं खौं
जंगलमें पेड़ को डाल पर बन्दर अपना रौब दिखा रहा था।
इस बन्दर को रोज मैं अकेले बैठे खौं-खौं करते देखता हूं। शायद इसे कोई अपना दोस्त नहीं बनाता तभी अकेला है।
मैं इसे अपना मित्र बना कर इसका अकेला पन दूर करूंगा। शायद कभी मेरे काम भी आ जाये।
बन्दर, तुम्हारा कोई अपना दोस्त नहीं ?
हीं, सब मुझे निखट्टू और बेकार शोर चाने वाला समझते हैं। ढपोर शंख कहते हैं।
ाओ मत, मैं तुम्हें अपना मित्र तैयार हूं। सदा तुम्हारा साथ गा। क्या नाम है तुम्हारा ?
मेरा नाम खाज नारायण है। क्या सच-मुच आप मुझे अपनाने को तैयार हैं ?
अब मैं दुनिया में किसी से नहीं डरता पहले से भी ज्यादा जोर से खौं-खौं करूंगा कोई मेरे साथ अकड़ेगा तो मेरा यार बैल सींग मार कर उसकी अंतड़ियां बाहर निकाल देगा। याऽऽऽ हूऽऽऽ चाहे कोई मुझे जंगली कहे।
यह बैल कितना महान् है। मुझ जैसे निखट्टू बंदर तक को अपना चमचा बना लिया। बैल साहब का यह उपकार कैसे चुका पाऊगा ? बदले में मुझे भी इनका कुछ भला करना चाहिये। ऐसे लायक और हमदिल बैल को तो जंगल का राजा होना चाहिये था। क्यों न शेर को राजा पद से हटा कर बैल बिठाने का यत्न करूं मैं।
पंचतंत्र
ड्राइ मारने हो क्या
ेर, तेरे गर्दन में कितने बाल हीं राजा की गर्दन में भी बाल ? कमर पतली है अरे लौंडिया मूछें ऐसी है जैसे घास हो। बेवकूफ ने आपको राजा बना तुमको त्याग पत्र दे देना। जंगल का राजा बनने लायक तो बैल है।
तेरी यह मजाल ? तेरी अपनी खोपड़ी की उपज तो यह हो नहीं सकती। जरूर बैल ने पट्टी पढ़ाकर भेजा होगा। अभी बैल की छुट्टी करता हूं मैं।
GRRRR!
शिक्षा—जिसके खाज नारायण जैसे दोस्त हों उसे दुश्मनों की जरूरत नही पड़ती। दुश्मन का काम भी वही कर जाता है।
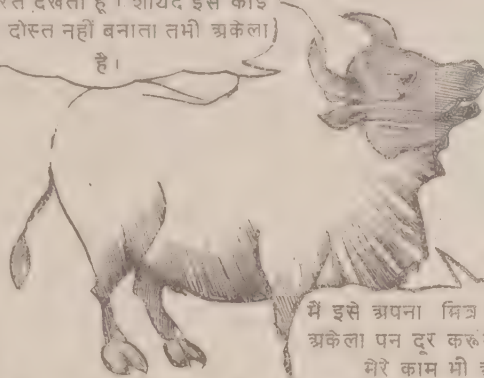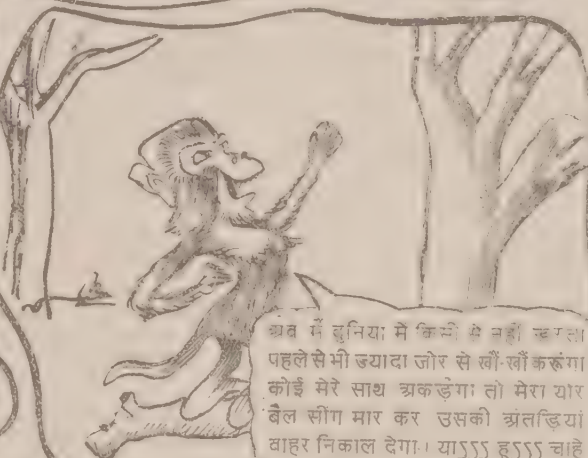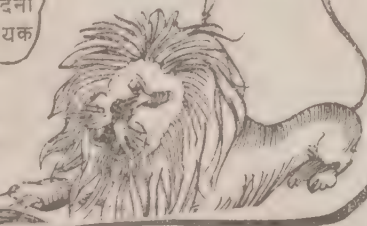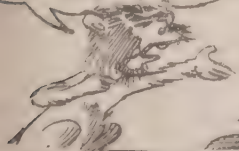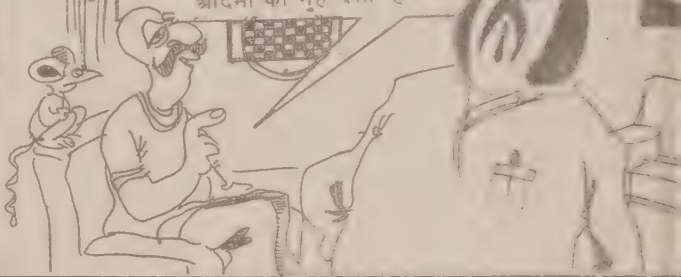
ऐसे ही मौकों पर तो आदमी का दिल शीशे के गिलास की तरह टूट जाता है। अपने सगे और मित्रजनों की पहचान होती है। अपने याडियों का यह हाल है। हमको है वफा की उम्मीद

उनसे, जो नहीं जानते वफा क्या है। दिल लूटने वाले जादूगर अब मैंने तुझे पहचाना है।

क्या बात सै चौधरी? यह काहे की बात कर रिया है। इसका मुँह रोने को हो रिया है जल्दी याद करो आज के दिन में क्या खूबी है?

कुछ दिमाग मे नहीं घुस रहा है। पिछले साल आज के रोज हमारी भैंस ने कटड़ा भी नहीं दिया था।

कितनी लज्जा की बात है? मेरा कलेजा मुँह को आ रिया है इनको इतना भी याद नहीं।

आज का दिन ही तो नहीं था जब पांच साल पहले इसकी गर्ल फ्रेंड कमलावती ने अपने बाप की फटी हुई धोती का रुमाल बना कर इसे प्रेजेन्ट किया था? इतना सैंटीमेन्टल एटेचमेन्ट और काहे से हो सकता है?

नहीं वह तो सर्दियों के दिन थे।
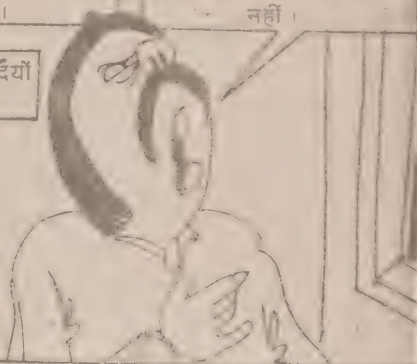
समझ गया आज्ञा, समझ गया। आज सुबह तेरी कब्जी ठीक हो गई होगी। पेट खुल गया होगा। पिछले दो साल से तेरा हाजमा ठीक नहीं चल रहा था नहीं? अच्छा तो हौर क्या हो सकता है। तू कोई सकेत दे हमको। हिंट के सहारे हम जान लेंगे कि आज क्या है?

मैं हलका सा इशारा दूंगा। थम दोनों अपने दिमाग का इस्तेमाल करके समझ लियो। आज से पैंतीस साल पहले मेरी अम्मा रामदेई ठीक इसी रोज पांच बज कर तेतीस मिनट पर एक बच्चे की मां बनी थी।

आज के रोज तेरा भाई या बहन पैदा हुई थी।

गलत !

HAPPY BIRTHDAY TO YOU!
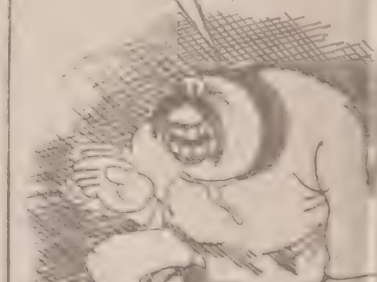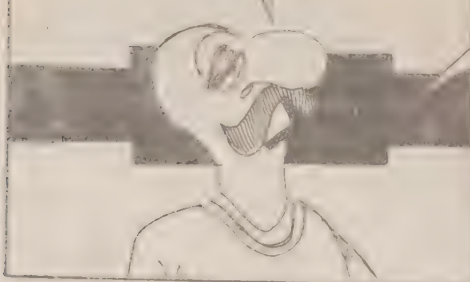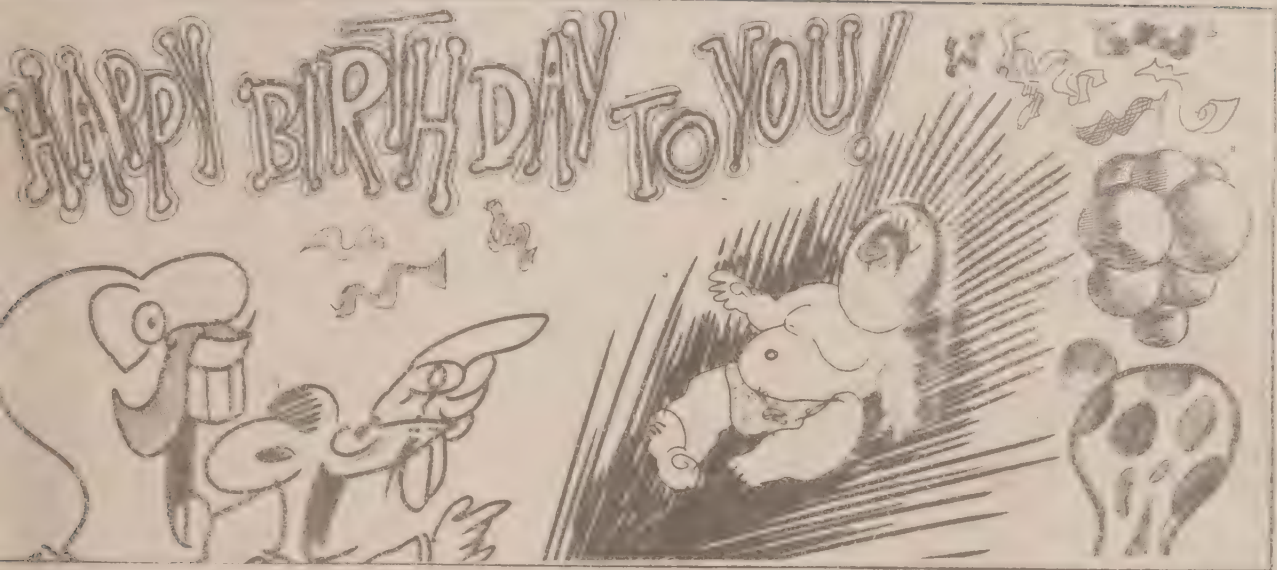
भाइयो और बहनों, आज के रोज
मैं इस धरती पर स्वर्ग से उतरा
गलती से आज के रोज मैं
हुआ था। आज मेरा जन्म
वही म दिवस जो कि साल
एक बार आता है।
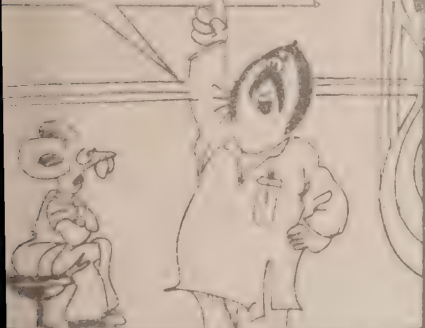
यह सब थारी कृपा का हो फल है कि म्हारे जैसे आदमी को कुछ बनने का मौका मिला। आज मेरा नाम दुनिया में मशहूर है। जमीन जायदाद है, हाथ मे पैसा है और समाज में इज्जत-आबरु है। बड़े-बड़े नेता हमसे सलाह लेने आते हैं।

इब थम ही बताओ हम क्यों न अपना वर्थ डे खूब ठाठ से मनायें जिस तरियों फिल्मी हीरो मनाता है? हम उनसे किस मामले में घट हैं?
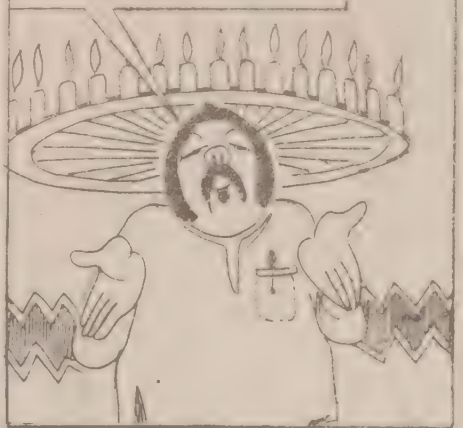
इस बार मैं इतने धूमधाम से अपना वर्थ डे मनाऊंगा कि दिल्ली वाले २६ जनवरी की परेड को भूल जायेंगे। रुपये, पैसे की कोई चिन्ता नहीं है। मैं पांच हजार रुपए नकद तक खर्च करने को तैयार हूं। शहर के सब बड़े-बड़े आदमियों को बुलाओ। दस मन के केक का आर्डर दे दो। क्या समझे?
इसके वर्थ डे की ऐसी स्कीम दिमाग में आई है कि सचमुच सारे शहर वाले बरसों तक याद रखेंगे। एक गधे को पकड़ कर वर्थ डे वाला केक खिला दो। फिर उसकी पूछ में बीस गुब्बारे नत्थी कर उस पर सिलबिल को उल्टा बिठा कर सारे शहर में जलूस निकलो।
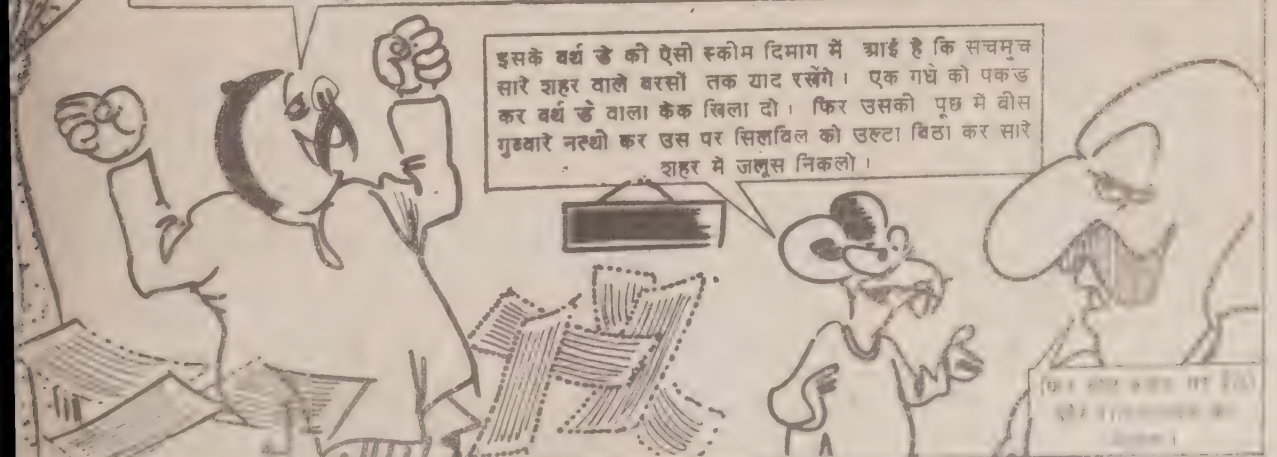
धूमधाम से बर्थडे मनाने के लिये कमेटी बनानी पड़ती है जैसे चरण सिंह की बर्थडे के लिये किसान सम्मेलन कमेटी है, जिसके अध्यक्ष मनीराम बागड़ी हैं। तेरी बर्थडे सम्मेलन कमेटी का अध्यक्ष मैं बन जाता हूं और पिलपिल कोषाध्यक्ष होगा। तू पांच हजार रुपये जमा कर दे। फिर हम बर्थडे पार्टी की ऐसी योजना बनायेंगे कि तूभी याद रखेगा।
चलो मुझे मंजूर है।
इब मजा आया न ? बेवकूफ को हमने अपने जाल में
लिया। कोई गेस्ट वेस्ट नहीं बुलायेंगे हम।
यह चींचीं मैंमैं करेगा तो हम इसको समझ लेंगे। यह बात बनी कि बाहर के आदमी आकर केक पेस्ट्री जायें और हम बाद में प्लेटें साफ करते रह
इसके पूरे पांच हजार ठिकाने लग जाने चाहियें।
तू चिन्ता न कर! रायल विह्स्की की चार बोतलें ले हजार तो उसी में उठ
यह क्या है भाई जी ? मोमबत्ती वाली पेस्ट्री केक कहां है ? टेबल पर यह तो शराब की बोतल धरी है।
वो तो ठीक से लेकिन जन्म दिवस पर मेहमान तो आने चाहिये थे न ? बगैर मेहमानों के कहीं जन्म दिवस मनता है ?
अरे बेवकूफ तुझ अक्ल कब आयेगी ? केक पेस्ट्री जनानियों और बच्चों का काम है। तू बोल तू बच्चा या जनानी ? यह शराब ही तो मर्द का खाजा है। तू मरद है, तेरा जन्म दिवस इसी तरह मनेगा।
तेरे जन्म दिवस पर तेरे खास यार दोस्तों का उसमें बाहर के किसी मेहमान को दालभात चंद की तरह क्यों घुसने दें ? हम दो तेरे हैं। हम तीनों मिल कर सराब की बोतलों का कर तेरा जन्म दिवस मनायेंगे।
UNT 62
हैप्पी बर्थडे टू यूऽऽऽ
CLINK!!
भाई जी, यो जन्म दिवस बोत बुरी चीज से। बोत आच्छा, बोत आच्छा! जन्म दिवस मनाने का यही तरीका बोत बढ़िया है। बोत बढ़िया !
मोरार जी भाई जी को पता लग गया तो थारे दोनों को गर्दन मरोड़ बोत बढ़िया माडल बना देंगे।
छोटे भाई, अब मान गया तू कैसी धूम है तेरे जन्म एक-एक के आठ-आठ हैं। इसी तरह मेहमानों की पूरी हो गयी कि नहीं ? खुश है न ?
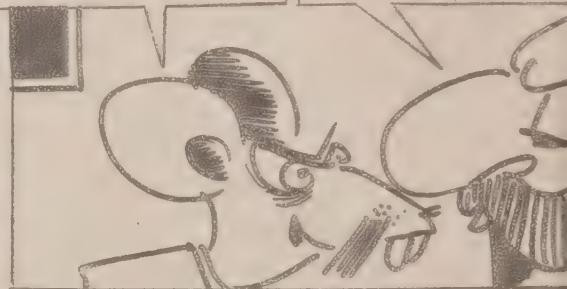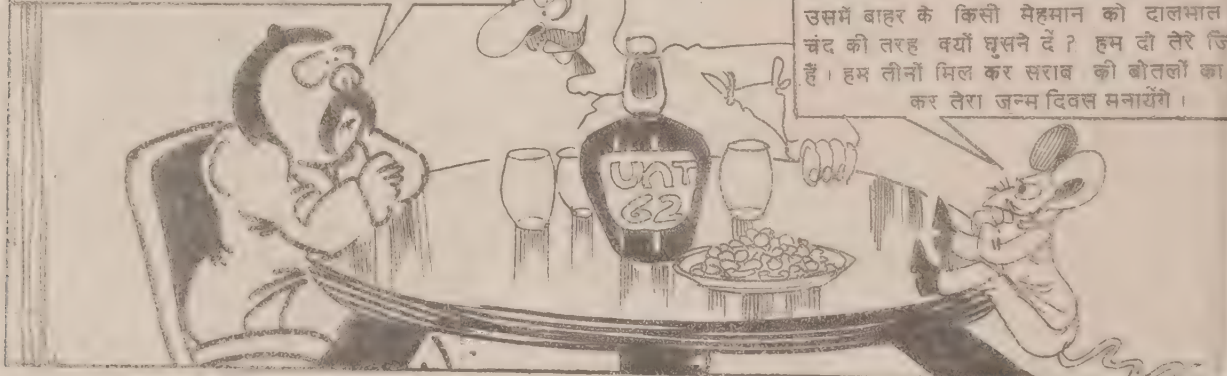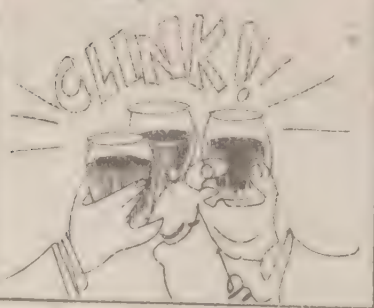
पिलपिल-सिलबिल के नये कारनामे अगले अंक में पढ़िये ।

दीवाना अंक २७ मिला पढ़कर आनन्द मग्न हो गया। सिलबिल-पिलपिल, मोटू-पतलू आदि चित्र कथायें रोचक लगीं। 'संगीता' की धारावाहिक कहानी 'दूसरी आत्मा' बड़ी ही रोचक है, लेखिका को बहुत-बहुत धन्यवाद। कृपया 'साप्ताहिक भविष्य' बन्द करके 'पाठकों के चुटकले' स्तंभ प्रारम्भ करें। 'खेल-खेल में' स्तंभ भी रोचक नहीं है। मैं 'मोटू-पतलू अथवा कोई अन्य चित्र कथा के लिए कहानी लिखकर भेजूं तो क्या आप प्रकाशित करेंगे? 'दीवाना 'फ्रेन्ड्स क्लब' की तसवीरें साफ नहीं आती ध्यान दीजियेगा। कृपया नये लेखकों को प्रोत्साहन देने पर विचार कीजिएगा। **योगेश कुमार—होशियारपुर**

कहानी पढ़ने के बाद ही फैसला किया जा सकता है कि वह प्रकाशन के योग्य है अथवा नहीं। —सं०

दीवाना अंक नम्बर २७ प्राप्त हुआ। मुखपृष्ठ देखकर ही यह आभास होता था कि दीवाना का यह अंक भी मनोरंजक होगा। इसमें चिल्ली लीला, दीवाने सुझाव, टेनिस कैसे खेलें, फैन्टम, पैकर सर्कस आदि बहुत अच्छे रहे। लुट्टन और मिट्टन बहुत ही अच्छा रहा। आप फिल्म पैरोडी शुरू करें बहुत ही मनोरंजन होता है, आप इसे जरूर-जरूर शुरू करें। किस्से कुर्सी के, कथा न्याय की, काका के कारतूस, खेल-खेल में, सिलबिल-पिलपिल एवं मोटू पतलू मुझे बेहद पसन्द आए। **अनुप दत्त शर्मा—तपकरा**

जब से मैंने 'दीवाना' पढ़ा है वास्तव में मैं उसका 'दीवाना' होकर रह गया हूं। हर दृष्टि से रोचक 'दीवाना' में यदि एक या दो रोचक कहानियां और हों तो 'दीवाना' की रोचकता में चार चांद लग जाएं।

प्रकाश चन्द अग्रवाल—धमतरी

दीवाना का नया अंक २७ प्राप्त हुआ। काफी हद तक मजा आया। मोटू-पतलू, पिलपिल-सिलबिल बहुत रोचक थे। दीवाना पत्रिका से हमको दो खजाने हासिल होते हैं। आप पूछेंगे कि कौन-कौन से खजाने अरे भाई एक खजाना तो हंसी का दूसरा खजाना 'अक्ल' यानी की दिमाग को अक्ल भी प्राप्त हो जाती है। **हरिश्चन्द्र धिमान—सहारनपुर**

दीवाना का पाठक मैं उस समय से हूं जब आपने दीपावली के अवसर पर मुखपृष्ठ पर दीवाना को लक्ष्मी देवी के रूप में पेश किया, बस उसी दिन से दीवाना का दीवाना हो गया। दीवाना का अंक २७ बाजार में बहुत समय बाद उपलब्ध हुआ। 'कोई है' कहानी अच्छी लगी। एक सुझाव है कृपया आप एक सप्ताह में फिल्म अभिनेता या अभिनेत्री का परिचय दूसरे सप्ताह क्रिकेट या किसी और से खेल से सम्बन्धित खिलाड़ी का परिचय प्रकाशित कीजिए तो अच्छा रहेगा। **[illegible]शेखर—हरिद्वार**

मैं दीवाना का नियमित पाठक हूं। अंक २७ प्राप्त हुआ। पाकर बहुत खुशी हुई लेकिन दीवाना लेट आया है। मुखपृष्ठ देखकर जी बाग-बाग हो गया। दीवाना एक रुपए में बहुत सस्ता मनोरंजन है। इस अंक में पैरोडी 'कुड़ेआम सेबम सुनाडाम' बहुत हास्यप्रद थी। 'मोटू-पतलू', सिलबिल-पिलपिल का तो कोई जवाब नहीं। आप कृपया 'फैण्टम और शादी की तैयारियां के पृष्ठ बढ़ा दीजिए। इस अंक में 'दूसरी आत्मा', 'मदहोश', 'परोपकारी' बहुत अच्छे लगे। लेखकों को मेरा धन्यवाद।

राकेश सेठी—दुधवा

'दीवाना अंक २६ में मा० घसीटाराम की जो हालत बनी, उस पर सारे परिवार को रोना आ गया। काका जी के 'राष्ट्रीय चने' नामक कविता सभी को पसन्द आई। इसे मैंने कक्षा में शिक्षक एवं लड़कों को भी सुनाया। सभी हंस-हंस पर पागल हो गए। ऐसी रचनाओं के प्रकाशन के लिए बहुत-बहुत बधाई। **[illegible] कोठिया—सूरत**

मुरझाये हुए चेहरों पर मुस्कुराहटों की बहार बिखेर देने वाली हमारी प्यारी रंगीली पत्रिका दीवाना का अंक २७ बड़े इन्तजार से मिला। 'कम्प्यूटर मानव' मोटू पतलू को रंगारंग कहानी इस बार बहुत ही मजेदार लगी। मुखपृष्ठ पर चिल्ली की शरारत और काजल किरण का रंगीन चित्र भी काफी आकर्षक लगा। 'सवाल यह है' कालम बहुत ही दिलचस्प कालम है कृपया इसे और भी मजेदार बनाएं। दीवाना यूं तो सभी के दिलों की दीवानी पत्रिका है मगर एक दुःख की बात यह है कि आपने चाहने वालों को इन्तजार ज्यादा करवाते हैं यानी दीवाना हर बार देरी से प्राप्त होता है।

एस० मन्सूर हुसन कादरी—बीकानेर

मेरे विचार से आप बहुत सी अच्छी मनोरंजक सामग्री हर अंक में देते हैं किंतु यदि आप छपाई की ओर समुचित ध्यान दें तो चार चांद लग जाएंगे। हर अंक में कुछ-न कुछ कहीं-न-कहीं छपाई की गड़बड़ नजर आती है। कृपया इस ओर ध्यान दें। आपकी इनामी प्रतियोगिताओं का हर अंक में समावेश होता है किंतु यहां अंक विलम्ब से मिलने के कारण मैं इन प्रतियोगिताओं में भाग नहीं ले पाता जबकि अवश्य लेना चाहता हूं। यदि अंतिम तिथि समुचित समय देकर रखी जाय तो अधिक पाठक प्रतियोगिताओं में भाग ले सकेंगे। आपके स्तम्भ अच्छे हैं व कुछ उपयोगी जानकारी से परिपूर्ण हैं जैसे 'क्यों और कैसे' स्तम्भ। मैं इनका संग्रह कर रहा हूं। यदि संभव हो तो कृपया इनके पीछे कोई अन्य उपयोगी सामग्री न प्रकाशित करें, विज्ञापन छापें।

होरी लाल कनोजिया—नासिक रोड कैम्प

पिछले दिनों एक डाके में हीरा मल जौहरी की हत्या हो गई, इस अपराध में अरुण पकड़ा गया। उसकी मित्र सुधा ने इस केस की छानबीन के लिए डिटैक्टिव चेलाराम ७०७ से सहायता ली, चेलाराम की मुलाकात वहां सुधा के अंकल से हुई। सुधा का होने वाला मंगेतर विमल प्रकाश भी उसके साथ था। इस बीच यह पत्र देकर अंकल गायब हो गया कि करोड़ों रुपये की जायदाद के लालच में सुधा और अरुण का साथ छुड़ाने के लिये अरुण को चक्कर में डाल कर यह हत्या-कांड उसने किया है। सुधा और चेलाराम केस की छानबीन के लिये बाहर निकले तो एक आदमी ने चेलाराम पर हाकी से हमला कर दिया और खुद ही गिर कर बेहोश हो गया। हाकी अन्दर से थोथी थी। उसमें से वह हार निकला जो जौहरी की दूकान से लूटा गया था. वह आदमी बच निकला और चेलाराम की मुलाकात हमीद नाम के एक आदमी से हुई, जिसके बारे में पुलिस को शक था कि वह भी डाका डालने वालों में से है। हमीद अपने को निर्दोष बताने के लिये चेलाराम के साथ पुलिस स्टेशन पहुंचा तो बाहर उसकी भेंट एक और आदमी से हुई जो नकली हमीद बना हुआ था। नकली हमीद और उसका एक साथी चेलाराम और सुधा का अपहरण करना चाहते थे। असली हमीद ने उसे मार कर पुलिस स्टेशन के बाहर ही ढेर कर दिया और उसके साथी से जा मिला। चेलाराम और सुधा जैसे ही पुलिस स्टेशन से लौटे उनकी कार अपहरण कर ली गई, और सुधा और चेलाराम असली डाकुओं के जाल में जा फंसे।

और भी कोई तारीफ करनी हो तो कर लो. मुझे गालियों से इतनी तकलीफ नहीं होगी जितनी गला घोंटने पर तुम्हें होगी ।

मैंने अभी बताया था ना, दौलत । तुम्हारी बेशुमार दौलत, जो तुमसे विवाह करके मैं हड़पना चाहता था ।
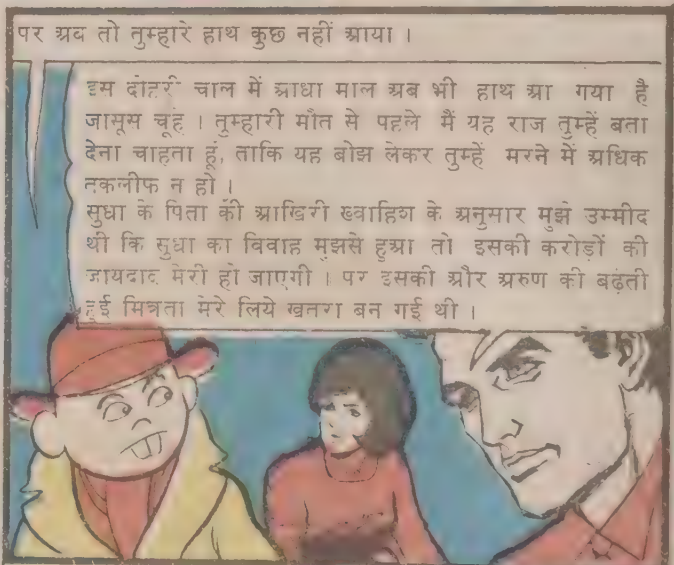
पर अब तो तुम्हारे हाथ कुछ नहीं आया ।

इस दोहरी चाल में आधा माल अब भी हाथ आ गया है जासूस चूहे । तुम्हारी मौत से पहले मैं यह राज तुम्हें बता देना चाहता हूं, ताकि यह बोझ लेकर तुम्हें मरने में अधिक तकलीफ न हो ।
सुधा के पिता की आखिरी ख्वाहिश के अनुसार मुझे उम्मीद थी कि सुधा का विवाह मुझसे हुआ तो इसकी करोड़ों की जायदाद मेरी हो जाएगी । पर इसकी और अरुण की बढ़ती हुई मित्रता मेरे लिये खतरा बन गई थी ।

मुझे डर था कि सुधा ने अरुण से विवाह करना चाहा तो इसे कोई नहीं रोक सकेगा और इस प्रकार एक बहुत बड़ा खजाना मेरे हाथ से निकल जाएगा । मैंने अकल के कान भर कर इसे सुधा और अरुण के विरुद्ध भड़काना चाहा । पर इससे भी बात बनती नजर नहीं आई और मुझे दूसरा नाटक करना पड़ा ।
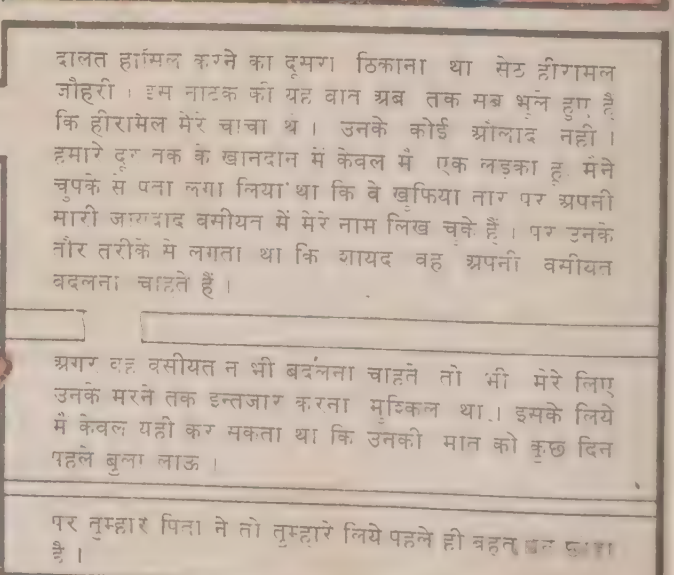
दौलत हासिल करने का दूसरा ठिकाना था सेठ हीरामल जौहरी । इस नाटक की यह बात अब तक सब भूले हुए हैं कि हीरामल मेरे चाचा थे । उनके कोई औलाद नहीं । हमारे दूर तक के खानदान में केवल मैं एक लड़का हूं. मैंने चुपके से पता लगा लिया था कि वे खुफिया तौर पर अपनी सारी जायदाद वसीयत में मेरे नाम लिख चुके हैं । पर उनके तौर तरीके से लगता था कि शायद वह अपनी वसीयत बदलना चाहते हैं ।

अगर वह वसीयत न भी बदलना चाहते तो भी मेरे लिए उनके मरने तक इन्तजार करना मुश्किल था । इसके लिये मैं केवल यही कर सकता था कि उनकी मौत को कुछ दिन पहले बुला लाऊं ।

पर तुम्हारे पिता ने तो तुम्हारे लिये पहले ही बहुत [illegible] है ।

उससे क्या होता है जासूस चूहे । सेठ हीरामल की जितनी दौलत मुझे मिलेगी उसका तुम हिसाब लगाओ तो तुम्हारा हार्ट फेल हो जाएगा, और सुधा की दौलत को भी उसमें जोड़ लो तो शायद हार्ट को फेल होने में और आसानी हो जाएगी ।

अब यही एक तरीका था कि सेठ हीरामल की दुकान में डाका डाला जाए और उनकी हत्या के अपराध में अरुण को फांसी हो । प्रिय चाचा जी के साथ-साथ अरुण का कांटा भी मेरे और सुधा के बीच में से साफ हो । इसके लिए मैंने डाकुओं का गिरोह तैयार किया, और कुछ ऐसे लोगों का पता लगाया जिन पर पुलिस को छोटे-मोटे अपराधों के सिलसिले में शक होता था ।
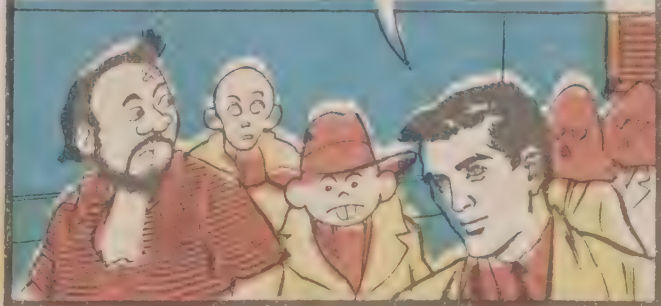
उनमें एक आदमी का पता लगा जिसका नाम है हमीद । यह खड़ा है तुम्हारे पास, हमीद । पर यह असली हमीद नहीं है । यह कलकत्ता जेल से भागा हुआ नामी लुटेरा भालू है, जिसने मुखौटा पहन कर अपने को हमीद की डिटो कापी बनाया हुआ है ।
पहले कुछ समाचार पत्रों में मिल कर इक्का दुक्का अपराधों में मैंने असली हमीद को बदनाम किया और ऐसे हालात पैदा किये कि हाकी की टीम बनाने के बहाने हमीद का नाम और उसके साथियों का नाम अपराधियों में आने लगा ।

सेठ हीरामल जौहरी की दुकान के दो नौकरों को मैंने पहले ही अपने साथ मिला लिया था । अरुण को मैंने यह कह कर बहका दिया था कि सुधा के जन्म दिन पर उसे एक अंगूठी भेंट करनी चाहिये । अरुण ने मुझे पहले से बता दिया था कि वह अंगूठी खरीदने किस समय जौहरी की दुकान पर जाएगा ।

जैसे ही अरुण जौहरी की दुकान में दाखिल हुआ, वहां डाका पडा, गोली चली । चौकीदार जख़्मी हो गया । हीरामल जौहरी की हत्या कर दी गई और दुकान पर मौजूद मेरे नौकरों ने मेरे साथियों को भागने का मौका देकर अरुण को पकड़ लिया ।

पर वहां से जो पिस्तौल मिली उस पर अरुण की उंगलियों के निशान बताये जाते हैं ।
यह बहुत आसान ट्रिक है माई डियर जासूस । जिस पर निशान हैं उस पिस्तौल को छूना और चलाना तो क्या अरुण ने देखा तक नहीं यह बात किसी से छुपी नहीं कि अरुण हाकी का बहुत अच्छा खिलाड़ी है । एक रोज हाकी के एक मैच के बाद मेरा एक आदमी एक नोटबुक लेकर अरुण के पास आटोग्राफ के लिये गया ।

नोट बुक पर पहले से ट्रांसफर सोल्यूशन लगा हुआ था। ऑटोग्राफ देते समय अरुण की उंगलियों के जो निशान नोटबुक पर बने उन्हें बाद में मैंने बहुत होशियारी से पिस्तौल पर ट्रांसफर कर दिया। पहले प्लास्टिक की एक झिल्ली पर, फिर झिल्ली से पिस्तौल पर यह निशान मैंने इस सावधानी से ट्रांसफर किये जैसे पिस्तौल पकड़ने पर बन सकते हैं।

रबड़ के दस्ताने पहन कर इस पिस्तौल से केवल हवा में फायर किया गया था, जिस गोली ने हीरामल की जान ली वह दूसरी पिस्तौल से चली थी। मेरी अब तक की स्कीम कामयाब थी। फांसी का फंदा आराम से अरुण की गर्दन की ओर आता जा रहा था कि बीच में तुम आ गये। तुम्हारी बहस से मुझे ऐसा लगा कि शायद तुम असल केस की तह तक पहुंच जाओगे।

तुम्हारे दिमाग की ट्रेन को बिल्कुल ही पटरी से उतारने के लिये मुझे नई हेरा-फेरी करनी पड़ी। वह थी सुधा के अंकल को अपराधियों से जोड़ना, मेरे आदमियों ने अंकल का अपहरण किया और तुम तक यह बात पहुंचाई कि यह डाकुओं के सरदार हैं।
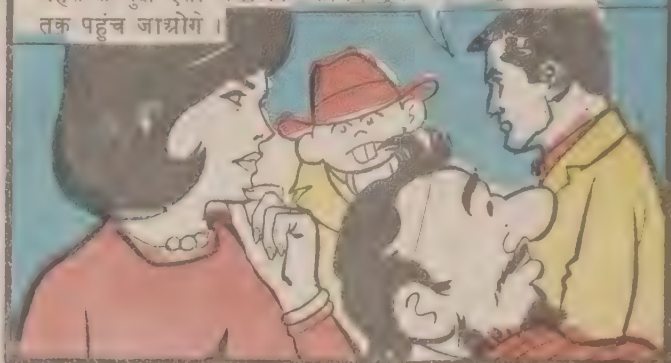
अब केवल तुम एक ऐसा कांटा बचे थे जिसे निकालना बाकी था। सुधा भी काबू में आ गई तो ठीक ही है, मेरे प्रिय चाचा जी की दौलत मिल जाएगी, मेरे लिए वही काफी है। अब मैं इस कहानी के बाकी बचे सभी पात्रों को समाप्त कर देना चाहता हूं। तुम्हें मारने के बाद तुम्हारे जिस्मों के कुछ हिस्से और कपड़े वहां झाड़ियों में डाल दिये जाएंगे जहां से तुम्हारी कार खाई में लुढ़की है, इसके बाद पुलिस यही समझेगी कि शायद तुम्हारी लाशों को जंगली जानवर ही खा गये हैं।

मेरे साथी से हाकी छीन कर उसमें से नौलखा हार तमने छीना। अब पहले मैं तुम्हारी इन आंखों को लोहे के गर्म सरियों से फोड़ूगा, जिनसे तुम मेरी ओर घूर-घूर कर देख रहे हो।

इसके बाद इनका सर काटने के लिये ऊपर से गंडासा लाना भालू।
अभी लाया।
हमीद के लिये
गुस्से पर काबू रखना कठिन हो रहा था

लो संभालो गंडासा ।

अरे क्या कर रहे हो, पागल हो गये हो भालू ।

प···प···पागल हो गये हो···! भ···भ···भालू ।

मैं भालू नहीं हूं हमीद हूं, असली हमीद ।

इस हंगामे में अब सुधा और चेलाराम
भी अपने जूडो कराटे के हाथ
दिखाने लगे ।

यह क्या धोखा हुआ ?
उम्नाद भालू कहाँ गया ।

उस मुर्गी के अंडे का आमलेट
बना दिया है
हमीद ने ।
इस अचानक हमले के लिये वहां कोई तैयार नहीं था ।
विमल प्रकाश और उसके साथी मार खा-खाकर गाजर मूली
की तरह गिरने लगे ।

अगले सप्ताह एक नई सनसनीखेज कहानी में अपने इन प्रिय कलाकारों से फिर मिलिये ।
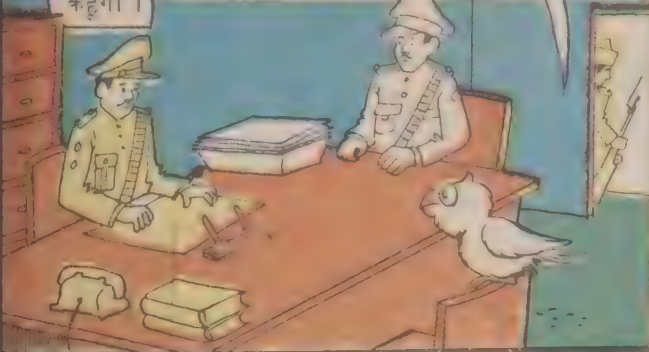
छुट्टन मिट्ठन
मैं छुट्टियों में घर जा रही हूं डियर झमूरे, मुझे पत्र लिखोगे तुम ?

जरूर लिखूंगा, दिन में दो-दो बार लिखूंगा मौनिका। यह तो मेरा सौभाग्य है कि तुम मुझे इस योग्य समझती हो।

लम्बा पत्र लिखना। यह नहीं कि चार अक्षर लिखे और बस।
लम्बा पत्र लिखूंगा जी। भला मैं तुम्हारी किसी बाल का उलंघन कर सकता हूं ?
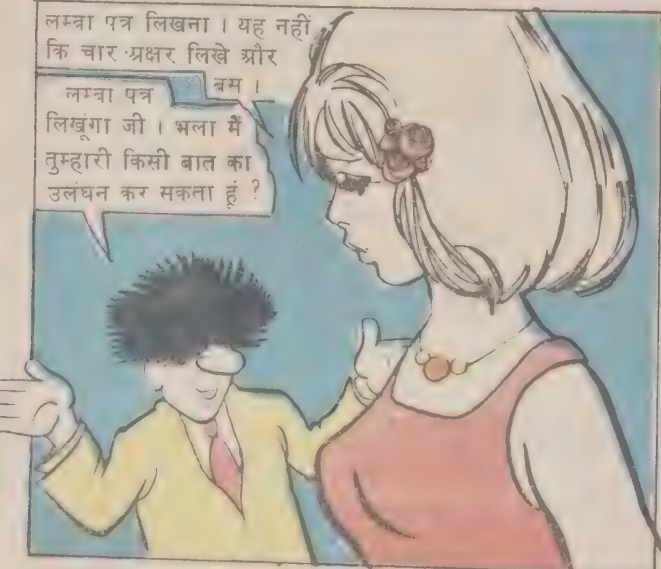
दो दिन बाद।
मोनिका ने लम्बा पत्र लिखने को कहा था। तुम हंस क्यों रहे हो ? क्या बात है ?

राकेश भारद्वाज—रोहतक

प्र० : विश्व में सबसे ज्यादा शतक किस देश के खिलाड़ी ने बनाए हैं ?

उ० : डॉन ब्रेडमैन, २९ शतक ।

श्याम लाल धीवास—रायगढ़

प्र० : ओलम्पिक खेलों में कौन-कौन से खेल खेले जाते हैं ? कृपया नाम बताइये ?

उ० : खेले जाने वाले खेलों की सूची तो बहुत लम्बी है। हां न खेले जाने वाले खेलों में, टैनिस, बैडमिन्टन, पिंगपांग, स्कवैश, क्रिकेट, शतरंज, पोलो, स्केटिंग, स्कीइंग, आइस हॉकी व रगबी प्रमुख हैं ।

योगिन्द्र ग्रोवर 'पप्पी'—पानीपत

प्र० : पाकिस्तान के क्रिकेट खिलाड़ी हनीफ मोहम्मद ने ४९९ रन किसके विरुद्ध बनाये थे ?

उ० : बहावलपुर के विरुद्ध ।

केवल प्रकाश अरोड़ा—काशीपुर

प्र० : भारत खेलों में पिछड़ता क्यों जा रहा है ?

उ० : प्रोत्साहन की कमी, अधिकारियों की तिकड़मबाजी, अवसरों का अभाव, निर्देशन की कमी तथा देश भर में पौष्टिक खुराक की तथा खेल के मैदानों की कमी—

...लकुमार अग्रवाल—देवरिया

प्र० : विश्व में 'गोल्फ' सबसे ज्यादा किस देश में खेला जाता है ?

उ० : अमरीका में ।

मु० फिरोज अहमद—नागपुर

प्र० : मेडन सेंचुरी का अर्थ बताने का कष्ट करें ? कौन से खिलाड़ी ने सब से ज्यादा मेडन सेंचुरियां कब मारी हैं ?

उ० : खिलाड़ी अपने टैस्ट जीवन में जो पहला शतक बनाता है उसे टेस्ट मेडन सेंचुरी कहते हैं।जाहिर है कि खिलाड़ी अपने जीवन में एक ही मेडन सेंचुरी बना सकता है ।

दुलियाजान—असम

प्र० : भारत की सबसे अच्छी दस फुटबाल टीमों को क्रम से लिखें एवं १९७७ में डी० सी० एम० फुटबाल टूर्नामेंट में सेमी फाइनल तक पहुंचाने वाली (ऑयल इंडिया दुलियाजान) टीम के बारे में आप अपनी विचारधारा से अवगत करायें ?

उ० : मोहन बागान, ईस्ट बंगाल, बार्डर सिक्योरिटी फोर्स, जे० सी० टी० मिल्ज फगवाड़ा, मफतलाल, डैम्पो, टाटाज, मुहम्मदन स्पोर्टिंग तथा वास्को—(ऑयल इंडिया दुलियाजान की टीम का १९७७ डी० सी० एम० में प्रदर्शन बहुत अच्छा रहा । उसे प्रशंसा भी बहुत मिली । लेकिन सचमुच की श्रेष्ठ टीमों में गिनती कराने के लिए ऑयल इण्डिया को विभिन्न मैचों में दो तीन वर्ष लगातार उसी स्तर का प्रदर्शन देना होगा ।

परमिन्दर सिंह—अमृतसर

प्र० : पाकिस्तान की क्रिकेट टीम का तेज गेंदबाज कौन है ?

उ० : सरफराज नवाज तथा इमरान-खान ।

राजदीप मोतीरामाणी—जलगांव

प्र० : हमने सुना है कि नवाब पटौदी और अजीतवाडेकर फिर से भारत की क्रिकेट टीम में खेलेंगे कृपया बताइये क्या यह सच है ?

उ० : आपने गलत सुना है ?

सैयद अब्दुल जब्बार—...

प्र० : आस्ट्रेलिया श्रृंखला १९७७ में किस खिलाड़ी ने अपने जीवन का १००वां टेस्ट मैच किया ?

उ० : बॉब सिम्पसन ने ।

... छिभियां रोहतास, बिहार

प्र० : सुनील गावस्कर वेदी से बहुत ... बल्लेबाज है तो इसे कैप्टन क्यों नहीं ... जाना और गावस्कर का ...ता क्या है ?

उ० : गावस्कर की बारी भी आने ही वाली है ।

गोपाल सिंहल 'टाइगर'—फतेहनगर

प्र० : क्रिकेट में विश्व का कौन ऐसा खिलाड़ी है जो 'मेन ऑफ दी मैच' का खिताब पाने योग्य है ?

उ० : हर टैस्ट मैच का अपना 'मैन आफ दी मैच' होता है। यह वह खिलाड़ी होता है जिसने उस मैच में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया हो। जाहिर है कि चुनाव एक मैच में भाग लेने वाले उन्हीं २२ खिलाड़ियों से होगा। अतः विश्व के खिताब का प्रश्न ही नहीं उठता ।

नगर टोली—पटना

प्र० : जूडो और कराटे सीखने का सबसे अच्छा साधन कौन-सा है ?

उ० : किसी प्रशिक्षक से प्रशिक्षण लेना ।

विजय कुमार—कटिहार

प्र० : भारत और इंग्लैंड के बीच कब क्रिकेट टैस्ट श्रृंखलाएं शुरू हुई थीं तथा उस समय भारतीय टीम के कप्तान कौन थे ?

उ० : १९३२ में, प्रथम टैस्ट मैच के कप्तान सी० के० नायडू थे ।

खेल-खेल में
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

हाकी कैसे खेलें

देश के सभी हाकी क्लबों तथा संगठनों को प्रोत्साहन और बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय स्तर की एक संस्था 'इण्डियन हाकी फैडरेशन' की स्थापना ग्वालियर में सन् १९२५ में हुई जिसके तत्वावधान में १९२८ में ओलम्पिक खेलों में भाग लेने भारत की प्रथम राष्ट्रीय टीम गई और वहाँ स्वर्ण पदक प्राप्त कर विश्व-विजेता का खिताब लेकर लौटी। विश्व-विजेता का सिरमौर हमें उस समय के प्रसिद्ध खिलाड़ी ध्यानचन्द और रूपसिंह के अथक परिश्रम से प्राप्त हुआ था। मेजर ध्यानचन्द तो 'हाकी के जादूगर' के नाम से प्रसिद्ध हैं और अभी भी हमारी भारतीय हाकी टीम को प्रशिक्षित कर उसका मार्गदर्शन करते हैं।

हमने बत्तीस वर्ष तक हाकी खेल पर अपना प्रभुत्व जमाए रखा लेकिन १९६० के ओलम्पिक खेलों में पहली बार पाकिस्तान से हमें हारना पड़ा। और उसके बाद तो हमें कई बार पराजय का लगातार मुंह देखना पड़ा। यहाँ तक कि प्रथम विश्व कप, द्वितीय विश्व कप हाकी प्रतियोगिता में भी हमें पराजय का मुँह देखना पड़ा। इस प्रकार हाकी खेल पर से हमारा प्रभुत्व समाप्त हो गया।

१९६४ में चरणजीत सिंह के नेतृत्व में हमने एक बार फिर अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा प्राप्त की। लेकिन १९६८ के ओलम्पिक में फिर से हमें धक्का लगा और पाकिस्तान ने विजय प्राप्त की।

इन निरन्तर होते रहने वाली पराजयों से हमें काफी ठेस पहुंची। भारत सरकार का ध्यान भी इस ओर गया और उसने गम्भीरता से हार के कारणों पर विचार किया। हाकी प्रशिक्षण शिविर लगाये गये। राष्ट्रीय और अन्तर्राज्यीय प्रतियोगिताओं का आयोजन कराकर उनमें से कुशल खिलाड़ियों का चयन किया गया। भारतीय हाकी खेल की पुरानी तकनीक छोड़कर नयी तकनीक अपनाई गई।

तब जाकर तृतीय विश्व कप हाकी प्रतियोगिता में हम विश्व पर अपना अधिकार कर पाये हैं। हमने अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा को फिर से प्राप्त कर लिया है। अब देखना यह है कि हम इस प्रतिष्ठा को बनाये रख पाते हैं या नहीं।

हाकी का मैदान

हाकी खेलने का मैदान लगभग १०० गज लम्बा तथा ५५ से लेकर ६० गज तक चौड़ा होता है। इस तरह यह एक आयताकार मैदान होता है। दोनों ६० गज या ५५ गज वाले सिरों पर एक-एक गोल क्षेत्र उनके ठीक बीच में स्थित होता है जिसकी
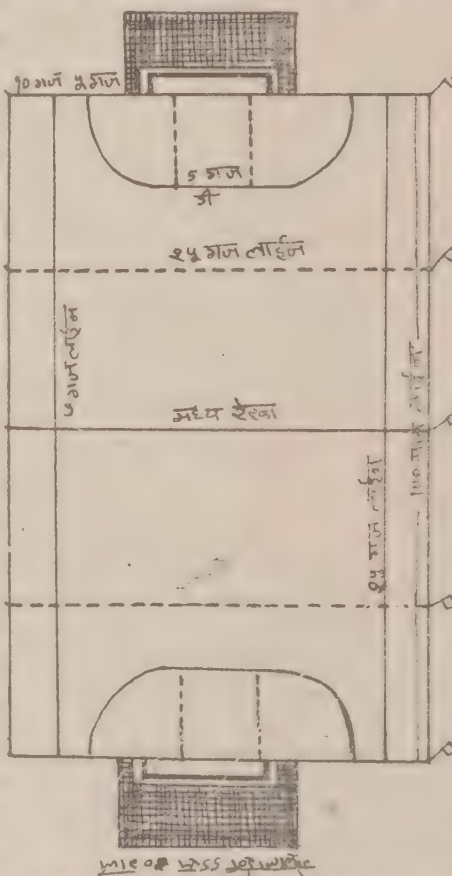
लम्बाई ४ गज होती है। गोल क्षेत्र की रेखा पर ८ फुट ऊंचे तथा लगभग ४ फुट घेर की दो बल्लियां (चौकोर) गढ़ी होती हैं। इन बल्लियों के ऊपरी सिरे से पीछे की ओर के गोल क्षेत्र को ढकते हुए ३२ फुट घेर का एक जाल लगा होता है।

खेल के आयताकार मैदान को २५-२५ गज के चार अंगों में बांट दिया जाता ... जो रेखा मैदान को आधे भागों में (य... ५० गज की दूरी पर) बांटती है, उसे ... रेखा (सेंटर लाइन) कहते हैं। खेल... शुरुआत भी मध्य रेखा से ही होती है।

गोल क्षेत्र की सीमा-रेखा को ... मानकर गोल क्षेत्र के आस-पास १६ ... की दूरी के व्यास पर एक अर्ध-चन्द्रा... घेरा खींच दिया जाता है। जिसे 'डी' (... नाम से जाना जाता है।

सौ गज लम्बी दोनों सीमा रेखाओं ... सिरे से ७-७ गज की दूरी पर दोनों ओर स... रेखा के समान्तर १०० गज लम्बी दो रे... खींच दी जाती हैं। दोनों सीमा रेखाओं ... दोनों ओर एक सिरे से दूसरे सिरे तक ... २५ गज की जो रेखाएं खींची गयी हैं ... निशान पर छोटी-छोटी डंडियों में झं... लगाकर गाड़ दिया जाता है ताकि पह... रहे। क्योंकि रेखाएं मिट जाती हैं या धुँध... भी पड़ जाती हैं। खेल का मैदान चूंकि ... होता है, इसलिए मैदान की सीमा-रेखा ... झंडियां मैदान के बराबर विभाजित निश... पर (२५ गज की दूरी) यदि लगी हो... मैदान के क्षेत्र का सही-सही अन्दाज ... रहता है। दोनों सीमा रेखाओं पर ... पांच झंडियाँ लगी होती हैं।

मैदान घास का भी होता है तथा ... का भी। घास वाले मैदान की घास ... एकसार काटा जाता है तथा मिट्टी ... मैदान से पहले उसकी सफाई करके कं... पत्थर दूर कर दिये जाते हैं. फिर पानी ... अच्छी तरह छिड़काव कर मैदान पर प... का रोलर फिराकर उसे समतल कर दि... जाता है उसके बाद सफेद खड़िया के पा... से उस पर रेखाएं डाली जाती हैं।

आवश्यक साज-सामान

हाकी खेल के साज-सामान में स... महत्वपूर्ण वस्तु स्टिक और गेंद है। उ... बाद नम्बर आता है गोलकीपर के लैग ... या पैड्स तथा हाथ के दस्ताने का। उ... बाद नम्बर आता है पोशाक का। पोश... का प्रभाव भी कम नहीं होता। खिल... जब एक रंग की सजी-धजी पोशाक में मैद... में उतरते हैं तो विपक्षी टीम के मनोबल ... विपरीत प्रभाव पड़े बिना नहीं रहता। इ... गोल क्षेत्र का जाल, गोल-स्तम्भ आदि ... साज-सामान में आते हैं।

(क्रमशः)

फैण्टम
और
शादी की तैयारियां

…हम घोषणा करते हैं कि अब तुम दोनों पति-पत्नी हो…
अब दुल्हन का चुम्बन लो ।

तभी सारा जंगल खुशी से झूम उठा !

घोषणा के तुरन्त बाद सारे जंगल में नगाड़ों की आवाज गूजने लगी।
…हम घोषणा करते हैं कि अब तुम दोनों पति-हो…
फैण्टम की शादी
PHANTOM WED…

फैण्टम की शादी

नगाड़ों पर मधुर आवाज एक जगह से दूसरी जगह फैलती ही गई फैण्टम हमारा घनिष्ट मित्र शादी के पवित्र बन्धन में बंध गया है ।
फैण्टम की शादी
फैण्टम की शादी

क्या मैं अब अपनी लाडली को प्यार कर सकता हूं ?
आपके बाद राष्ट्रपति लुआगा ।
कुमारी तगामा ?
तुम मुझे अपनी मां ही समझो ।

मि० मौज तुमने शादी समारोह बहुत खूबसूरती से सम्पन्न किया है ।
धन्यवाद डियाना ।

बेचारे हिज को कोई नहीं चूम रहा आओ मैं तुम्हें प्यार करता हूं…
हिज ।

ओह डियाना मुझे जरा अपनी अंगूठी तो दिखाना ।
सुन्दर है, बहुत सुन्दर किस चीज की बनी हुई है ?

पहले यह रोम के सम्राट की महारानी के पास थी फिर कई राजकुमारियों के हाथ में रह चुकी थी…।

यह सिर्फ राजकुमारी और डियाना की अंगुली में ही फिट आ सकती है ।
ओह ! प्रिय, मुझे तो इसको पहनते हुए लग रहा है, क्यों न हम ले ?

रेक्स यह हिज यहां पर कैसे आया ?
गुरां की मदद से··· ईडन में से किसी न किसी को तो शादी में शामिल होना ही था, हिज हो मनुष्य से मिलता जुलता प्राणी है ।
यह हिज क्या है ?
मम्मी यह गुफा का दैत्य है ।

दोस्तों, आओ बांदर लोगों ने तुम्हारे लिये एक शानदार भोज तैयार किया है अब उसका भी स्वाद ले लें ।

मम्मी डरो नहीं ।
मुझे पता है यह सिर्फ कुकुरमुत्ता खाता है, शायद सोच रहा है कि मैं वही हूं ।

घने जंगलों में शादी भोज ।
मम्मी डरो नहीं, यह शराब नहीं है यह फलों का जूस होगा या फिर झरने का ठंडा पानी !
पानी ? जिनको शराब चाहिये हो वह क्या करें ?
फैंटम का कहना है कि इस जंगल में किसी भी तरह की शराब या नशीले पदार्थ नहीं आना चाहिये यह रीति रिवाज सदियों से फैंटम के पूर्वजों का बना है ।

यह प्रभावशाली बूढ़ा कौन है ?
बूढ़ा आदमी मौज है··· कहानियां सुनाता है इसे सब कुछ पता है । ऐसी कोई बात नहीं है जिसका इसको ज्ञान न हो···

संकेत

बायें से दायें

१. शादि रहना उलट पलट करने पर खून की होली खेल सकता है । (३-२)

५. रनवास में बेअन्त उल्टे जानवर । (३)

६. साहब में चर्बी ? (२)

७. अंग्रेजी में झटके लगते हैं लेकिन हिन्दी में है हॉबी । (२)

८. भासकर बतरा में कवित्त लहजे में क्षमता है । (३)

९. टोली जो पहले अंजरी पहनती है और अंत में अंधेरे में जाती है ! (३)

ऊपर से नीचे

१. बीवी के प्रेमी का हत्यारा जो पहले कई किस्म का था ? (४)

२. पुरवा में ठोस वस्तु ! (२)

३. ठाट-बाट जिसमें सिलाई मशीन की सीमित हॉबी है ? (२-३)

४. किया जिसमें प्रत्येक कतरन का आधा भाग है ? (४)

८. मरासर में उल्टी लीला पूर्वार्द्ध में । (२)

गुड़िया बनाइये प्रतियोगिता

हमारी छोटी आयु की पाठिकायें और पाठक भी कई गुड्डे-गुड़िया बनाने के शौकीन होंगे । यह प्रतियोगिता उन्हीं के लिए है । हमें चिल्लो की गुड़िया या गुड्डा बनाकर भेजें । सर्वश्रेष्ठ गुड़िया को २५ रुपये पुरस्कार, द्वितीय को १० रुपये और तृतीय को पांच रुपये । विजेताओं के फोटो व पुरस्कृत रचनाओं के चित्र हम दीवाना में छापेंगे । कृपया गुड़िया खुद बनायें । यह प्रतियोगिता १५ वर्ष से कम आयु वालों के लिये है । अन्तिम तिथि १४ अक्तूबर ७८

चित्र बनाइये प्रतियोगिता

केवल काली स्याही से निम्न दृश्य को चित्रांकित करके हमें भेजिए सर्वश्रेष्ठ रचना को रु० पुरस्कार ।

दृश्य—एक व्यक्ति नदी में डूब रहा है किनारे खड़ा एक आदमी मजे से सिगरेट फूंकता उसे बचाने के लिए कूदने की बजाय डूबते आदमी की तरफ 'तैरना सीखें' शीर्षक की पुस्तक फेंक रहा है !

अन्तिम तिथि १४ अक्तूबर १९७८

प्र० : निकट दृष्टिदोष में कौन से लैंस का प्रयोग किया जाता है और क्यों ?

जय कुमार सोनी, जबलपुर
अजय कुमार गुप्ता, तपकरा म०प्र०

उ० : ऐनक के आविष्कार से पहले हजारों कमजोर आंखों वाले लोगों के कष्ट की कल्पना कर सकना भी कठिन है। दूर का न देख सकने वाले आकाश के टिमटिमाते तारों, उड़ते पक्षियों या बादल अथवा पर्वत की ऊंची चोटियों को देखने का आनन्द कभी नहीं ले सकते थे। आजकल दूर का या केवल पास का देख सकने वाले समान दृष्टि रखने वालों के समान ही देख सकते हैं क्योंकि चश्मे की सहायता से उनकी दृष्टि का निवारण कर दिया जाता है।

सरलरूप से हम देखने का कार्य प्रकाश के आंख के अन्दर जाकर दृष्टि पटल पर पड़ने से करते हैं। दृष्टिपटल कैमरे की फिल्म के समान आंख के अन्दर एक झिल्ली नुमा होती है। प्रकाश छाया दृष्टिपटल पर सही जगह पड़ने से ही वस्तु साफ दिखाई देती है इसके बजाय यदि प्रकाश छाया दृष्टिपटल से पहले या उसके पीछे बने तो भी दिखाई नहीं देता। छाया को ठीक जगह पर लाने के लिए हमारी आंख में एक लैंस लगा रहता है जो कि छाया का ठीक स्थान पर केन्द्रीकरण करता है, जब सामान्य आंख किसी वस्तु को देखती है तो इस लैंस की सहायता से छाया ठीक स्थान पर पड़ती है तथा हम साफ देखते हैं। अधिक पास की वस्तु देखते समय छाया दृष्टिपटल से पीछे पड़ती है परन्तु आंख की विशेष मांसपेशियां सिकुड़ कर लैंस का रूप बदल देती हैं और छाया दृष्टिपटल के ठीक स्थान पर पड़ती है, इसी प्रकार दूर की वस्तु देखने में भी लैंस को फोक्स कर वस्तु बिना कठिनाई के देखी जाती है।

दृष्टि दोष इस लैंस में कई कारणों से विकार आने पर होता है जैसे लैंस का लचीलापन पन कम होने पर, जो कि आयु अधिक होने पर अक्सर हो जाता है, आंख की मांस पेशियां लैंस का रूप बदलने में असमर्थ हो जाती हैं तथा वे छाया को दृष्टिपटल पर ठीक से अंकित नहीं कर पाते। दूसरे ज्यादा छोटी तथा ज्यादा लम्बी आंख होने पर भी कुछ दृष्टि विकार उत्पन्न हो जाते हैं। जैसे छोटी आंखों वाले दूर की वस्तु भली प्रकार देख सकते हैं परन्तु निकट की वस्तु देखने के लिए इन्हें आंख को बहुत अधिक फोक्स करना पड़ता है जो कभी-कभी असम्भव हो जाता है। इसलिये चश्मे की सहायता लेते हैं जिसके लैंस आंख के लैंस का कार्य करते हैं तथा आंख के लेंस को दृष्टि-पटल पर छाया अंकित करने के लिए फोक्स नहीं करना पड़ता।

लम्बी आंखों वाले व्यक्ति निकट दृष्टि दोष के रोगी होते हैं। इनकी आंख में छाया दृष्टि पटल से पहले ही बन जाती है। ऐसे व्यक्ति यदि आंख के लैंस को और सिकोड़ते हैं तो छाया और अधिक धुंधली हो जाती है इसके लिए ये अवतल या कोनकेव लैंस का चश्मा पहनते हैं। इस लैंस की सहायता से छाया दूर हो कर ठीक दृष्टि-पटल पर पड़ती है तथा इस प्रकार ये साफ देख सकते हैं। दूर दृष्टि दोष वालों को उत्तल या कोनवेक्स लैंस के चश्मे का प्रयोग करना पड़ता है।

प्र० छिपकली कितने प्रकार की होती है तथा वे दीवारों से चिपक कर कैसे चलती तथा नीचे क्यों नहीं गिरती ?

विरेन्द्र अवस्थी, कानपुर

उ० छिपकली रेंगने वाले जीवों की जाति की होती हैं ये सांपों की निकट सम्बन्धी होती हैं। अधिकतर छिपकलियों तथा सांपों में इनके चार पैरों का ही अन्तर होता है। कई किस्म की छिपकलियां बिना पैरों के सांपों के समान ही रेंगती हैं। स्लोवर्म नामक छिपकली को सांप से इनकी घूमती आंखों तथा बिना कटी जीभ से आसानी से मिलाया जा सकता है।

संसार के सभी गर्म भागों में लगभग २००० किस्म की छिपकलियां पाई जाती हैं। ये दो इंच से लेकर १० फुट तक की होती हैं १० फुट की बड़ी छिपकलियां इंडोनेशिया में कोमोडो ड्रैगन के नाम से जानी जाती हैं किसी-किसी जाति की छिपकलियों का खाने में भी प्रयोग किया जाता है इनकी बढ़िया खाल के चमड़े को दस्ताने, जूते तथा बटुए इत्यादि बनाने में प्रयोग किया जाता है। छिपकलियां अधिकतर अंडे ही देती हैं, परन्तु कुछ विशेष बच्चों को भी जन्म देती हैं। ये ज्यादातर कीड़े-मकोड़े खाती हैं यद्यपि कुछ को पौधे इत्यादि खाते भी जाना गया है। गिरगिट अपनी लम्बी जीभ को बाहर फेंक कर कीड़े पकड़ता है। कुछ विशेष किस्म की छिपकलियां ही विषैली होती हैं इनमें १८ इंच लम्बी गीला मोन्सटर विशेष उल्लेखनीय है ये दक्षिण पश्चिमी अमरीका के रेगिस्तान में पाई जाती हैं। इसके जहरीले दांत इसके मुंह के काफी भीतर को होते हैं।

छिपकलियां पेड़ों पर या पृथ्वी पर रहती हैं परन्तु इनके घूमने फिरने के ढंग अलग-अलग होते हैं। भारत में साधारणतया पाई जाने वाली छिपकली 'गैको' कहलाती है। गैको के पैरों के नीचे विशेष प्रकार के खाल के बल होते हैं, जिनकी सहायता से ये छतों पर चिपक कर उल्टी तक बड़ी आसानी से चलती हैं। कुछ छिपकलियां अपने अगले पैर उठा कर केवल पीछे के दो पैरों पर तेजी से भाग लेती हैं। उड़नेवाली छिपकलियां अपनी पंखों जैसी खाल को फैला कर हवा में लम्बी छलांग लगा लेती हैं।

शत्रुओं से अपनी रक्षा भी ये अनोखे ढंगों से करती हैं। यदि शत्रु की पकड़ में इसकी दुम आ जाए तो ये दुम को तोड़ कर उसके पंजे से निकल जाती है। इनकी टूटी हुई दुम फिर से उग आती है गिरगिट अपना रंग बदल कर अपने को आसपास के रंग में मिला लेता है और इस प्रकार अपने शत्रु से अपना बचाव करता है। एक और कलगी वाली आस्ट्रेलियन छिपकली, अपनी रक्षा कलगी को डरावने ढंग से फैला कर फुंकार मार कर करती है। इसी तरह टैकसाल में पाई जाने वाली सींगो वाली छिपकली अपनी आंखों से खून बरसा कर शत्रु को भयभीत कर देती है।

क्यों और कैसे ?
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

हास्य बाल कथा

पुरानी तरकीब की मौत

ओमप्रकाश गुप्ता

गुरुप्रसाद और चेलाराम बड़े पक्के मित्र थे। एक दूसरे को वे प्राय: गुरु-चेला कहकर ही सम्बोधित करते थे। नाम चाहे जो हो पर उनके काम सदा निराले रहते थे। तरीके से सोचना तो जैसे उनकी जन्म-पत्री में ही नहीं लिखा था। फिर भला वे ढंग से काम कैसे करते। ऊपर से तुर्रा यह कि दोनों गुरु-चेला अपने को दुनिया में सबसे अधिक बुद्धिमान मानते थे। अपने सामने वे सारे संसार को मूर्ख समझते थे। कामधाम तो कुछ था नहीं इसलिए गुरु और चेला दोनों मिलकर अक्सर धन कमाने की सोचा करते थे।

एक बार गुरु और चेला दोनों पार्क में घूम रहे थे कि अचानक चेला गम्भीर हो उठा।

'क्या बात है चेले, तुम देवदास कैसे बन गये ?'

'डिस्टर्ब मत करो गुरु। अभी जन्म होने वाला है।'

'कैसा जन्म ?'

'मैंने कहा न, तुम चुप रहो।'

झल्लाकर चेले ने कहा तो गुरु को भी ताव आ गया। फिर क्या था ? बातों ही बातों में दूसरा महाभारत होने की नौबत आ गई। आस-पास के लोग भी वहाँ जमा हो गये।

'क्या हुआ ?'

एक वृद्ध ने बीच-बचाव करने की सोच-कर पूछा तो चेला उन पर भी बिगड़ने लगा।

अगर तुम लोग इसी तरह बीच में बोलते रहे तो क्या होगा ? इसी बात पर गुरु से झगड़ा हुआ था कि कुछ होने से पहले ही यह बीच में डिस्टर्ब कर रहा था।'

चेले की झिड़की सुनकर बेचारा वृद्ध तो चुप हो गया। साथ ही एक और व्यक्ति बोल पड़ा, 'पर बात क्या है भाई ? आखिर ऐसा क्या होने वाला था जो किसी के बोलने से नहीं होगा।'

'ओ हो। मेरी समझ में यह नहीं आ' कि तुम लोगों के पेट में दर्द क्यों हो रहा है ? अगर कुछ होगा भी तो उससे किसी को कोई अन्तर नहीं पड़ेगा। हाँ हम लोगों का भला जरूर हो जायेगा। आप सब कृपा करके अपना-अपना रास्ता नापिये और मुझे मेरे हाल पर छोड़ दीजिए, जाइये''जाइये यहाँ से सब दूर।'

चेले की यह कर्कश आवाज सुनकर वहाँ आये सभी अपना सा मुंह लेकर बड़-बड़ाते हुए चले।

'अरे भले आदमी, इतना बडा हंगामा कर दिया अब तो बता दे किसका जन्म होने वाला है।'

अब की बार गुरु ने पूछा था और वह भी बड़े प्यार से।

'गुरु तुम भी बहुत जल्दी करते हो। कुछ देर चुप रह जाते तो लाखों रुपयों का सवाल था।

लाखों रुपयों की बात सुनकर गुरु की आंखों में चमक आ गई। उसने तुरन्त कहा, 'अगर यह बात थी तो पहले क्यों नहीं बताया। लो मैं बिल्कुल चुप हो जाता हूं। पर चेले कम से कम मुझे तो बता दो कि किसका जन्म होने वाला है।'

'होने वाला नहीं है कहो।'

चेले को निराशा होते हुए देखा तो गुरु ने उत्सुकता से पूछा, 'क्या मतलब ?'

'मतलब यह है कि मेरे दिमाग में एक बहुत ही बढ़िया तरकीब का जन्म होने वाला था जिससे हम लाखों रुपया कमा सकते थे। तुम्हारी बकवास से सारा मूड ऑफ हो गया। अब रोना अपनी किस्मत को।'

यह सुनते ही गुरु के तो होश ही उड़ गये। अरे कम्बख्त अगर इतनी बड़ी रकम का सवाल था तो मुझे इशारा ही कर दिया होता। हाय राम ! अब क्या होगा ? इतना रुपया हाथ से चला गया। अब मैं क्या करूं ?'

कुछ देर रोने पीटने के बाद गुरु तो शांत हो गया लेकिन चेलाराम धड़ाम से चारों खाने चित्त जमीन पर गिरकर धूल फांकने लगा। उसे इस तरह गिरते देख गुरु ने शोर मचाना शुरू कर दिया। देखते ही देखते वहाँ फिर से भीड़ जमा हो गई।

'अरे मेरा मित्र बेहोश हो गया। जल्दी से इसे अस्पताल ले चलो। मेरी मदद करो भाई।'

चेले की हालत देखकर गुरु ने लोगों से प्रार्थना की।

'चलो भई चलो। उठाओ इसे, बेचारे को कहीं कुछ हो न जाये।'

एक अधेड़ से व्यक्ति ने कहा तो चार युवक आगे बढ़े और चेले को उठाकर पार्क से बाहर को चलने लगे। गुरु भी उनके पीछे-पीछे ऐसे चल रहा था जैसे कोई मन
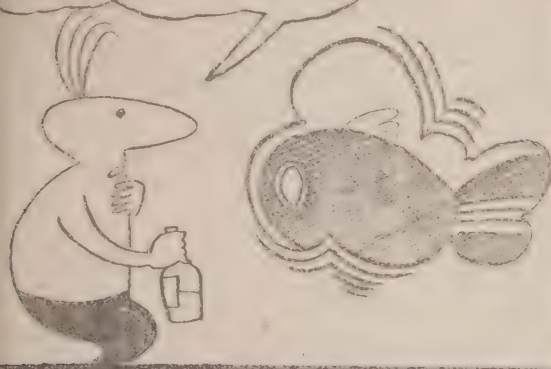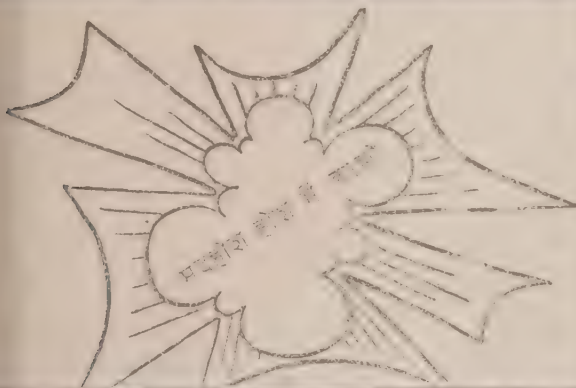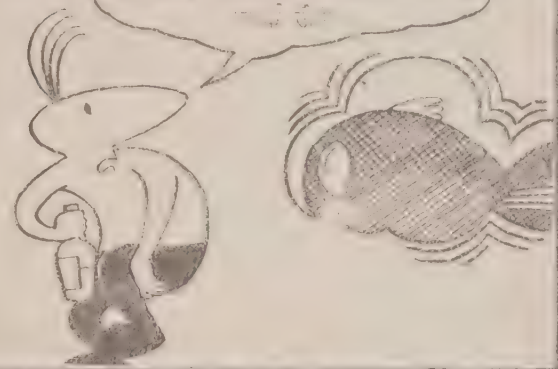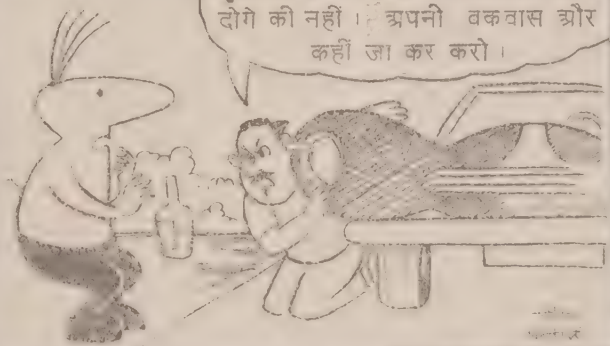
का पहाड़ उस पर टूट पड़ा हो।

अभी चेले का जुलूस पार्क के बाहर भी नहीं पहुंचा था कि उसने आंखें खोलते हुए धीरे से पूछा, 'मैं कहाँ हूं? आप लोग मुझे कहाँ ले जा रहे हैं?'

'होश आ गया। इसे होश आ गया।'

एक व्यक्ति ने कहा और दूसरे सभी खुश हो गये। उन्होंने धीरे से चेले को अपनी बाहों से उतारकर घास पर लिटा दिया। गुरु के चेहरे पर भी प्रसन्नता बिखर गई थी। तभी चेले ने उठते हुए कहा, 'अब मैं ठीक हूं।'

'अच्छा भाइयों! अब आप जाइये! इस सहायता के लिए मैं आपका आभारी हूं।'

हाथ जोड़कर नाटकीय ढंग से गुरु लोगों को विदा करके मुड़ने ही लगा था कि उसके कूल्हों पर एक जोर का थप्पड़ पड़ा।

'यह क्या बदतमीजी है?'

गुस्से में लाल-पीला होते हुए गुरु ने पलटकर कहा तो चेला सतर्कता से बोला, 'अबे मूर्ख! तू इनकी चमचागिरी में पड़ा हुआ है और मैं इनसे पीछा छुड़ाने की जल्दी कर रहा हूं।'

यह कहकर चेले ने एक पर्स आगे बढ़ाते हुए कहा, 'लो यह रहा आज का कमाल। अब इसे खोलकर देखो कि मेरी तरकीब का फल कितना मीठा है।'

पर्स पकड़ते हुए गुरु के चेहरे पर मुस्कान फैल गई।

'नहीं रे यह तो पुरानी तरकीब ही थी। आज तो मैं कुछ ऊंची ही सोच रहा था। खैर अब पुरानी तरकीब...'

चेले ने अपनी बात पूरी भी नहीं की थी कि गुरु ने पर्स को अच्छी तरह देखने के बाद एक-एक रुपये के दो नोट निकाले और एक को चेले की ओर बढ़ाते हुए कहा, 'लो कुल दो रुपये ही निकले हैं इसमें तो। सम्भालो अपने हिस्से का एक रुपया।

'धत् तेरी की। सूट जनाब ने शाही पहन रखा था और पर्स में कुल दो ही रुपये। खैर जो मिला सो ही ठीक।'

बड़बड़ाते हुए चेला एक रुपये के नोट को अपनी पैंट की पिछली जेब में रखने लगा। जेब में हाथ जाते ही वह दंग रह गया। 'मेरा पर्स? गुरु! आज तो कोई मेरी जेब पर ही हाथ साफ कर गया।'

यह सुनते ही गुरु ने भी अपनी जेब टटोली और दूसरे ही क्षण वह भी उछल सा पड़ा।

'मारे गये। चेले! आज तो कोई हमें ही चक्कर दे गया।'

'हाँ गुरु! कुछ ऐसा ही हो गया।'

'अब बोल। अपने दिमाग से किसी नई तरकीब को जन्म दें जिससे आज का घाटा पूरा हो सके।'

गुरु ने हाथ फेंकते हुए कहा तो चेला उदास हो उठा। 'तुम नई तरकीब के जन्म की बात कर रहे हो गुरु। यहाँ तो पुरानी तरकीब की ही मौत हो गई।'

'तुम चिन्ता मत करो चेले, ऊपर वाला सब कुछ देखता है। राम उठाये ऐसे पापियों को जो पुरानी चीजों को भी नहीं जीने देते। चल उठ। अब तो ये दो रुपये ही हमारे रक्षक हैं। पहले कुछ खा पी लें। फिर धंधे की बात सोचेंगे।'

गुरु ने चेले का हौसला बढ़ाते हुए कहा।

कुछ देर बाद गुरु और चेला दोनों पैर पीटते हुए पार्क से बाहर निकल गये। ●

मंत्री जी का रामराज्य

प्रशांत चौधरी

वे ऐसे मंत्री थे जिनको आराम सर्वाधिक प्रिय था। आम जनता उन्हें 'मिनी कुम्भकर्ण' कहा करती थी। निद्रा में मग्न होकर एक दिन उन्होंने एक पूज्य ख्वाब देखा कि वे सैक्रेटरी से कह रहे हैं—आज हम शहर का मुआयना करना चाहते हैं। हम देखना चाहते हैं कि हमारे राज्य में कितने लोग सुखी हैं। गाड़ी का बन्दोबस्त कर दिया जाए हम अतिशीघ्र प्रस्थान करेंगे।

सैक्रेटरी की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई। अब क्या होगा? शहर में चारों ओर अराजकता फैली हुई है। राहजनी, डाके, बलात्कार, गोलीकांड तथा मजदूरों एवं छात्रों की हड़तालें चल रही हैं। आम जनता इस खिचड़ी मंत्रिमंडल से काफी नाराज है। यदि पोल खुल गई तो क्या होगा? अब तक तो चमचों ने उन्हें भुलावे में रखा। सैक्रेटरी समझ नहीं पाया आज ऊंट करवट क्यों बदल रहा है? लेकिन अंततः उसे ज्यों आज्ञा सरकार की मुद्रा अपनानी ही पड़ी।

गाड़ी में बैठने के बाद मंत्री जी ने कहा—सैक्रेटरी! तुम्हें अनुशासन की मर्यादा का ज्ञान अवश्य होगा। इस मामले में मैं काफी सख्त हूं। सरकार और जनता के बीच अनुशासन की मुख्य कड़ी है पुलिस! इसलिए हम सबसे पहले थाने का निरीक्षण करेंगे। हमें अनुशासन की रिपोर्ट चाहिए। जैसे ही गाड़ी थाने के पास पहुंची, मंत्री जी चिल्ला पड़े—सैक्रेटरी! यह क्या? पुलिस वाले एक दूसरे के गले में हाथ डाल कर गप्पें मार रहे हैं, कोतवाल सो रहा है और इन्स्पेक्टर उपन्यास पढ़ रहा है। इन सबको गोली से···

चाटुकार सैक्रेटरी ने झट उत्तर दिया—नहीं सरकार, नहीं, इनकी सामूहिक विश्रांति से सिद्ध होता है शहर कितना अनुशासित है। जनता पर पुलिस की पकड़ है। अब यदि शहर में अराजकता न हो तो पुलिस के मक्खी मारने को क्यों दोष दिया जाए।

सैक्रेटरी के जवाब से मंत्री जी अत्यन्त प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा—अस्पताल चलो। हम देखना चाहेंगे आम आदमी के स्वास्थ्य का क्या हाल है। वहां जाकर देखा कि अस्पताल का [illegible]टर एवं नर्स प्रेमालाप कर रहे हैं। मं[illegible] बरस पड़े—यह क्या? जनता के स्वास्थ्य का ध्यान छोड़ कर अनैतिक [illegible]ालाप! सैक्रेटरी [illegible]ल ही इन्हें टर्मिनेट कर दिया जाए।

चालाक सैक्रेटरी ने कहा—सरकार! आप इन्हें समझने में भूल कर रहे हैं। ये वही डाक्टर्स एवं नर्सेस हैं, जिन्होंने आपके आज्ञानुसार परिवार कल्याण की मिट्टी पलीद की थी। आपके डर से तो मच्छर भी शहर में प्रवेश नहीं करते अतः किसी के बीमार होने का कोई प्रश्न ही नहीं उभरता

है। इसलिए ये लोग खाली समय का सदुपयोग कर रहे हैं। प्रेम तो प्राकृतिक नियम है सरकार। सैक्रेटरी की बौद्धिकता से मंत्री जी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके। उन्होंने कहा—दुकानों में चलो। हम जानना चाहते हैं जनता को कंट्रोल के रेट में अनाज मिल रहा है कि नहीं।

लेकिन वे आश्चर्य चकित रह गये, दूकानों में खरीददारी नहीं हो रही थी। मंत्री जी के चेहरे को सैक्रेटरी ने पढ़ लिया। अब वह कैसे कहे कि बड़े व्यापारी अनाज दबा कर कृत्रिम अभाव उत्पन्न कर रहे हैं, तथा ब्लैक में बेच रहे हैं। उसने कहा—सरकार आप जानते हैं कि आज पहली तारीख है। लेकिन आम जनता इतना सामर्थ्य रखती है कि महीने के आखरी तारीख को ही खरीददारी कर लेती है। इसलिए आज भीड़ नहीं है।

इस प्रशंसा से मंत्रीजी उभर भी नहीं पाये थे कि उन्होंने देखा फुटपाथ में बहुत से लंगड़े, अंधे, कोढ़ी भिखारी फटे कपड़ों में दयनीय अवस्था में बैठे हुए हैं। उन्होंने सैक्रेटरी से पूछा—तुम तो कहते थे हमारे राज्य में कहीं भी दरिद्रता नहीं है फिर श्वेत-श्याम छवि क्यों?

सैक्रेटरी जोरों से हंस पड़ा—सरक[illegible] ये भिखारी नहीं अखिल भारतीय फैंसी ड्रे[illegible] प्रतियोगिता के कलाकार हैं। ये विभि[illegible] राज्यों से आये हुए हैं। स्टेज तक जाने [illegible] लिए ये लोग बस का इन्तजार कर रहे है[illegible] मंत्री जी ने गहरी सांस छोड़ी और क[illegible] डिग्री कालेज चलो।

कालेज में परीक्षा तिथि को आगे बढ़ा[illegible] के लिए हड़तालें चल रही थीं, कुलपति [illegible] पुतला जलाया गया था। इसलिए अनिश्चि[illegible] काल के लिए कालेज बन्द था। लेकि[illegible] चालाक सैक्रेटरी ने कहा—कालेज की शां[illegible] इस बात की द्योतक है कि छात्र शांति प्रि[illegible] हैं। क्लासों में पढ़ाई चल रही है। इसलि[illegible] उन्हें डिस्टर्ब करना बेकार है। क्यों[illegible] निःसंदेह छात्र आपकी जय-जयकार करें[illegible] आपके आटोग्राफ लेंगे, तब विकट परिस्थि[illegible] उत्पन्न हो जाएगी। अतः यहां से प्रस्था[illegible] किया जाए।

कुछ दूर जाने के बाद उन्होंने देखा ए[illegible] जुलूस बैनर आदि लटकाए नारे लगाते [illegible] जा रहे थे सैक्रेटरी ने स्थिति को भांप लिय[illegible] जरूर ये मजदूर हैं, और मंत्री जी का क[illegible] कचूमर न निकाल दें। इसलिए उसने दूर [illegible] ही गाड़ी रोक दी और कहा—सरकार! [illegible] लोग आपके द्वारा प्रस्तावित मूर्तिलग[illegible] कमेटी की सिफारिश के पक्ष में नारे लगा र[illegible] हैं आप उनसे मिल कर क्या करेंगे। आप [illegible] देवता हैं, आपको अन्तर्यामी ही रहना चाहि[illegible] चलिए लौट चलें।

घर लौटते हुए उन्होंने देखा, एक [illegible] से भवन के सामने आदमियों की काफी [illegible] धुक्की हो रही थी। उन्होंने पूछा—यह [illegible] हो रहा है? सैक्रेटरी ने कहा—सरकार [illegible] आपके व्यक्तित्व की पृष्ठभूमि को केन्द्रित क[illegible] एक प्रसिद्ध फिल्मकार ने फिल्म बनाई है—[illegible] 'किस्सा रामराज्य का' यह उसी की [illegible] है। जनता उस फिल्म के लिए पागल [illegible] सरकार! अंत में वे खुशी से चिल्ला [illegible] थे—मैंने रामराज्य ला दिया, मैंने राम[illegible] ला दिया। लेकिन जब उन्होंने रेडियो [illegible] अपने बारे में यह समाचार सुना कि मं[illegible] आचरणसिंह को उनकी अकर्मण्यता के का[illegible] मंत्रीमंडल से निष्कासित कर दिया गया [illegible] तो उन्हें दिन में भी तारे नजर आने लगे।

सवाल यह है ?

क्या इनका भी कोई जवाब है ?

जो लोग पहले जनता पार्टी को भगवान का बहुरूपी अवतार मानते थे वे आज इसे 'पांच सरों वाला दरिंदा' कहते हैं। यह कहावत आपने सुनी होगी, 'अंधा बांटे रेवड़ियां मुड़-मुड़ अपनों को दे।' सत्ता में आने के बाद कुर्सियों की बन्दर बांट में पंचमुखी नेताओं की हालत कुछ ऐसी ही है। पर उनमें कुछ ऐसे भी हैं, जो अंधे की आंखों में भीम सैनी काजल डाल कर कह रहे हैं, यह धांधली नहीं चलने देंगे। '९० लाख रेवड़ियों' के घोटाले पर आयोग बिठाओ। जिस पार्टी को जुड़े देर नहीं हुई उसके टूटने की नौबत आ गई है, फिर भी एकता के लिये मीटिंगें हो रही हैं, चलिए आपको एक ऐसी मीटिंग का आंखों देखा हाल दिखायें।

आगामी अंक में देखिये, एक और लाजवाब सवाल।
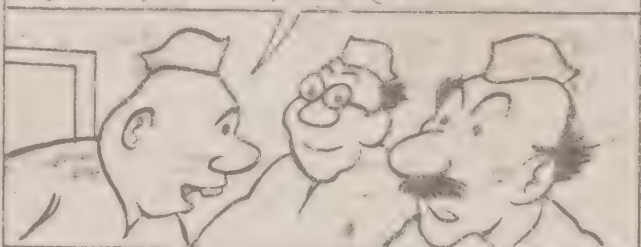
यादों की गलियां

शशि जैन

नगर में हम नये नये आये थे। आते ही मकान की समस्या मुँह बाये खड़ी थी। सामान को मित्र के घर रखा। खुद सुबह शाम, दोपहर मकान की खोज बीन करने लगे। शहर के एक कोने से दूसरे कोने तक इतने चक्कर लगा डाले कि उसका हिसाब रखना मुश्किल हो गया। बड़े यत्न से क्रीम पालिश लगा कर दुलार से पाले गये जूतों ने दुनिया की लम्बाई चौड़ाई पर आश्चर्य प्रगट करते हुये मुंह बा दिया।

किसी मकान को हम नापसन्द कर देते, कोई मकान मालिक हमें। किसी का किराया सुन हमें अटैक होने लगता तो कोई दूसरा कॉमन बाथरूम वाला घर हमारे माथे पर लकीरें खींच जाता। किसी को हम पसंद करते तो मित्र नापसन्द। किसी तरह हम दोनों एकमन हो भी जाते तो मित्र पत्नी की पसन्द ही आड़े आ जाती। महीनों खाक छानने के बाद हमें एक ऐसा घर भी मिल गया जिसे हम तीनों ने और जिसके मकान मालिक ने हमें और हमारी जेब को संतोष-जनक माना।

मकान बड़ा ही सुन्दर था। बड़ा खूब-सूरत, बड़ा प्यारा। चार खूब बड़े-बड़े कमरे, संगेमरमर और संगेअसवद के चौकोर टुकड़ों से सजा खूबसूरत फर्श। यहाँ से वहां अलहड़ युवती सी घूमती मस्त हवा। कमरों से आंख मिचौनी करती धूप, दिन भर चलता पानी और चौबीसों घंटों बनी रहने वाली बिजली, सभी कुछ थे इसमें।

श्रीमती जी के आने जाने योग्य सीढ़ियों की सुविधा जनक चौड़ाई देख कर हम इत्मीनान से उनके आने की प्रतीक्षा करने लगे।

स्टेशन से आते हुए हम रास्ते भर उन्हें घर की अच्छाईयां गिनाते रहे परन्तु स्कूटर के गली में दाखिल होते ही उनकी तेवरी में जो बल पड़े उनसे हम एक दम सन्नाटे में आ गये। कहां तो हम उनसे इनाम की आशा कर रहे थे कहां उल्टे उनके आगे हाथ पैर जोड़ कर किसी तरह से उन्हें उल्टे पैरों मायके जाने से रोकने को मजबूर होना पड़ा।

घर श्रीमती को नापसन्द नहीं था। बस गली में होना ही उसका सबसे बड़ा ऐब था। घर तो मिल गया था पर हमें हरदम बड़ा सतर्क रहना पड़ता था। तनिक सी असुविधा पर श्रीमती जी बिस्तर बांधने लगती थीं। हम कभी कान पकड़ते, कभी नाक रगड़ते। अपने माफ होने वाले कसूर की माफी मांगते रहते। उनके जरा से नाराज होने पर हमें दिल के दौरे पड़ने लगते। वह थी बंगलों, कोठियों में पली शहजादी, भला वह गलियों की कीमत क्या जानती थीं। पर सच मानिये हम अपनी जिन्दगी का सोलहों आने मजा लूट रहे थे। बस श्रीमती जी का मूड ही बदमजा पैदा कर रहा था।

यहां दिन भर आलू-छोले, दही-बड़े, टिकिया, गोलगप्पे वाले घूम-घूम कर फेरी लगाते रहते। हम शाम को रोज बाकायदा मजे से गोलगप्पों का सेवन करते, कभी फलों की चाट खाते तो कभी कुल्फी। हमारी दुबली-पतली काया में स्वास्थ्य के लक्षण प्रगट होने लगे थे।

हम जो हमेशा से घर घुसड़ और एकान्त प्रिय कहलाते थे अब घर बैठे ही दुनिया का मजा ले रहे थे। जरा सी फुरसत मिलते ही पड़ौसिन अपने-अपने छज्जों पर आ खड़ी होतीं। हम सबकी सूरत शक्ल से ही नहीं उनके नामों, यहां तक उनके बाल बच्चों के नामों से भी परिचित हो गये गली के आरपार, घर के, पड़ौसियों के कच्चे चिट्ठे बयान होते। देखने में वह सीधी साधी रमणियां भी इतनी रोमांटिक सकती हैं। इसकी हमको कल्पना भी थीं। वह जगबीती में पूरा रस ले रही किसका किसके साथ चल रही है, किसके साथ इशारे बाजी कर रहा है, किस किससे रोमांस है? यह हम घर बैठे ही रहे थे। पिक्चरों की कहानियों का खुला हीरो हिरोइनों की हर अदा का बखान मुस्कराहटों और अदाओं के साथ सुन जाता। उनकी बातें सुन कर हम भी को हीरो से कम नहीं समझ रहे थे।

हमारे कमरे के सामने ही एक खि खुलती थी। नये विवाहित दम्पति वहां रहे थे। दीन दुनिया से बेखबर वह अपने राग रंग में खोये थे। हम किन-किन रस डूबे, किन-किन रंगों में डूबे अब क्या बता

एक अन्य दृश्य हमें रोज ही देखने मिलता। पड़ौस की एक आधुनिका श को ढकने वाली कम, दिखाने वाली अ चुस्त पोशाक में हाथ में किताबें निकलती। उनके घर से निकलते ही चुस्त नौजवान आंखों पर काला चश्मा च उनके पीछे चल देता। कभी मुड़कर, चिट्ठी गिरा कर उनका प्रणय जीवंत रहता। हमें अपने कॉलिज का जमाना आने लगता, जब हमने कितनी सन्न निर्मलाओं को घर से कॉलिज और कॉ से घर पहुंचाया था। हमारी रगों में वार फिर नया खून दौड़ने लगा था।

यहां शाम होते ही चूल्हे जलने और उन चूल्हों का धुंआ फैलते-फैलते में घूसने लगता। शाम को आंखों से तरह आंसू टपकते कि लगता कि

प्रेमिका का मातम मना कर लौटे हैं। मजबूर हो कर हमें शाम को हवाखोरी के लिये निकलना पड़ा। कहते हैं न कि घूमने से पतले लोग मोटे और मोटे लोग पतले होने लगते हैं। अब श्रीमती जी की अतिरिक्त चर्बी कुछ कुछ हम पर भी छाने लगी है। अब हम दोनों को साथ देख कर लोग पहले की तरह नहीं हंसते। श्रीमती जी गलियों में बनी रहने वाली गन्दगी और बदबू की शिकायत करती रहती हैं फिर भी यहां रह कर हम पहले की अपेक्षा हर तरह से सुखी हैं। हमारी तरफ बढ़ते बुढ़ापे के चरण पीछे हटने लगे हैं। हमारे चारों तरफ बिखरा यौवन और जिन्दगी हमें नया जीवन देने लगी है। हमने कविता की कापी ढूंढ़ कर नई कविताएं लिखनी शुरू कर दी हैं। सच पूछा जाये तो गलियों का वातावरण ही कमानी और कविता पूर्ण है। ऐसा न होता तो कवियों और शायरों ने अपने कलामों में गलियों और कूचों का इतना जिक्र न किया होता। गालिब साहब ने तो इनकी शान में सैकड़ों शेर कह डाले हैं। अगर गालिब साहब गली कूचों में रहने की जगह बंगलों में रहने वाले होते तो उनकी शायरी में यह दर्द, यह अहसास और यह तड़प न होती। वह जिन्दगी को इतने करीब से देख, महसूस न कर पाते।

गलियां, माशूका और साहित्य सृजन का कितना गहरा सम्बन्ध है यह तो जग जाहिर है।

गलियों में दूरी भी कितनी है। पास-पास सटे घर, हर वक्त दिखने वाले चेहरे, हर घर हर आदमी का राज दूसरे का राज है। हर घर की बीमारी, दुख तकलीफ सब बांट कर रहते हैं।

मैं श्रीमती जी को सब दिखाता हूं। सब समझाता हूं पता नहीं वह क्यों कुछ भी समझना नहीं चाहतीं। हर वक्त बंगलों की रट लगाये रहती हैं। हर वक्त मैके जाने की धमकी देती रहती हैं। मैं यही सोच कर कांपता रह जाता हूं कि वह मुझे इस कमानी वातावरण में छोड़कर चली गई तो मेरा क्या होगा?

मुझे पत्नि या गली दोनों में से एक को चुनने को कहा गया है। मैं बड़ी मजबूरी में, बड़े गम और दर्द के साथ शीघ्र ही यह गली छोड़ कर बंगले में जा रहा हूं। ●

रूप का जादू

आजाद रामपुरी

देखकर,
उनका मुखड़ा,
दर्पण चूर-चूर हो,
होगया टुकड़ा ॥
अब तक उसे,
गिरगिट से ही—
पाला पड़ा था,
किन्तु आज तो,
जो पूरा लुढ़कन-लोटा,
हरफन मौला,
और चिकना घड़ा था,
ऐसा एक साक्षात—
दल-बदलू नेता खड़ा था।

सार्थक प्रयास

वे,
कवि को,
पैग पर पैग पिलाते रहे!
कविवर,
श्रोताओं से शून्य मंच पर,
बिना माइक के,
कई घण्टे तक,
गला फाड़-फाड़ कर चिल्लाते रहे।

सही रूप

एक नेता जी,
जब सभा मंच से दहाड़े यों—
"हमारे पूर्व के नेताओं का दायरा,
था सीमित और छोटा
अर्थात् उनमें से हर व्यक्ति था,
बेपेंदी का लोटा!
अब हमारा दृष्टिकोण,
अपेक्षाकृत व्यापक और
बड़ा है·······।"
तभी एक श्रोता बोला—
'हां-हां ठीक है,
अब आपका हर नेता,
हरफन मौला,
बेपेंदी का चिकना घड़ा है।

कुछ फिल्म स्टारों के व्यंग्य चित्र

राजनीतिक व्यंग्य चित्रकार की नजर में
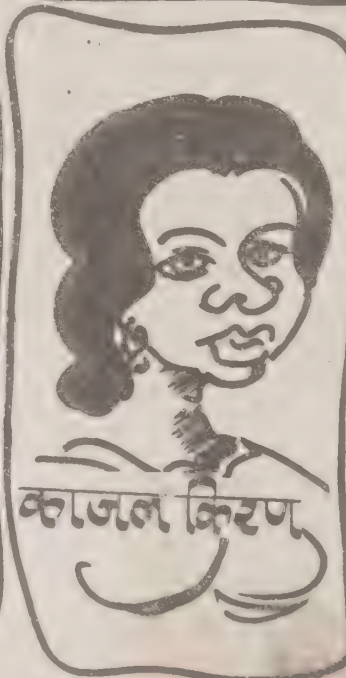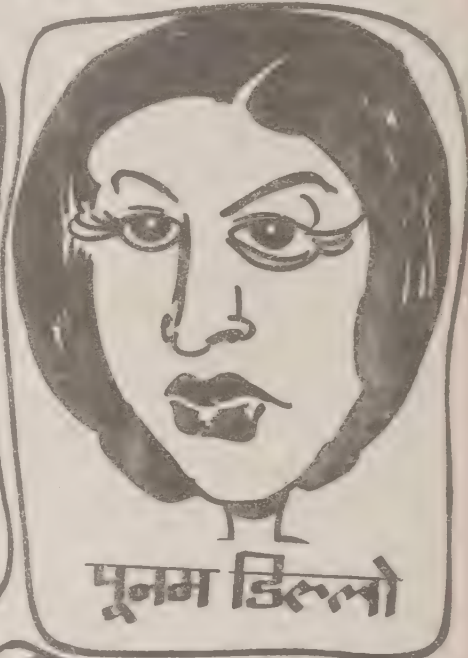
'यह सच है कि मैं रानी से प्यार करता हूँ—रानी मेरा पहला और आखिरी प्यार है—उसके बिना मैं जिन्दा नहीं रह सकता—रचना से मैंने केवल आपके कहने से शादी की है।'

'अबे गधे ! अगर यहाँ किसी ने देख लिया तो क्या होगा ?'

'मुझे किसी की परवाह नहीं।' दशरथ ने दृढ़ स्वर में कहा।

'तुझे इसकी भी परवाह नहीं कि अगर किसी ने देख लिया तो बात ठाकुर साहब तक पहुँचेगी···ठाकुर साहब हम सबको खड़े-खड़े निकाल बाहर करेंगे—और अगर उन्होंने रचना के लिए तलाक भी ले लिया तो समझ लो सब-कुछ बर्बाद हो गया—तेरी तीनों बहनें जीवन-भर कुंवारी रह जाएंगी।'

'बापू—' दशरथ ने गम्भीरता से कहा, 'आपकी इन बातों के दबाव में आकर मैंने रचना के साथ फेरे ले लिए थे···लेकिन यह सच है कि आज तक रचना को एक पत्नी का स्थान नहीं दे सका—आज तक हम दोनों एक-दूसरे के लिए अजनबी हैं।'

'क्या ?' ज्वाला प्रसाद हड़बड़ा गए।

'हाँ बापू···मुझे रचना का चेहरा देख कर अत्यन्त कुढ़न और दुःख होता है···मैं प्रायः सोचता हूं कि उस निर्दोष ने क्या अपराध किया था जिसका यह दण्ड उसको मिला। अब तो मैं यह भी सोचता हूं कि यह सब मुझे नहीं करना चाहिए था—आखिर मैं मर्द हूं—शिक्षा पूरी करके नौकरी करता और अपनी बहनों की शादी अपने हाथ की कमाई से करता।'

ज्वाला प्रसाद भौंचक्के-से दशरथ को देख रहे थे···फिर वह बोले—

'क्या तुझे मालूम है कि तेरी तीनों बहनों की शादी में कितना खर्चा होगा ?'

'जितना भी होता मैं स्वयं ही करता।'

'···दस बरस में भी तू इतना न कमा पाता।' ज्वाला प्रसाद दाँत किटकिटा कर बोले, 'और तू यह बात आज बता रहा है कि रचना को तूने अभी तक अजनबी के रूप में रखा हुआ है—और यह बात उसने ठाकुर साहब को बता दी तो इसका क्या परिणाम होगा ?'

'जानता हूं···' दशरथ कटु स्वर में बोला, 'मैं हर प्रकार के परिणाम के लिए तैयार हूं।'

ज्वाला प्रसाद भौंचक्का-सा खड़े रह गये। दशरथ तेज-तेज चलता हुआ आगे बढ़ गया। ज्वाला प्रसाद की आंखें आश्चर्य से फटी हुई थीं···उन्होंने यह नहीं देखा था कि जिस स्थान पर दशरथ खड़ा था वह स्थान ठाकुर साहब के बैड-रूम के पास ही था···उनके बैड-रूम की छोटी खिड़की भी खुली हुई···उन दोनों की एक-एक बात ठाकुर साहब ने सुन ली थी—और वह सकते में अपने बिस्तर पर बैठे रह गए थे···उनकी आंखें शून्य में घूरती रह गई थीं···

ज्वाला प्रसाद एकाएक हड़बड़ा गए···उनकी नजरें छोटी खिड़की में से ठाकुर साहब पर पड़ीं और उन्हें ऐसे लगा जैसे उनके पैरों तले से धरती खिसक गई हो···ठाकुर साहब बिस्तर पर बैठे जाग रहे थे···वह उधर ही देख रहे थे—ज्वाला प्रसाद के हाथ-पांव फूल गए थे···वह सोच रहे थे कि अब क्या होगा ? ठाकुर साहब ने सब कुछ सुन लिया है···उन्होंने सारी वास्तविकता जान ली है—कहीं ऐसा न हो कि वह हम सबको घर ही से निकाल दें—फिर क्या होगा ?···तीनों लड़कियों की शादी कैसे होगी ?

—'नहीं, नहीं, यह नहीं हो सकता···यह नहीं हो सकता—'

ज्वाला प्रसाद के मस्तिष्क में तेजी से एक विचार उभरा और उनका दिल जोर से धड़क उठा···फिर उन्होंने चोरों के समान इधर-उधर देखा—चौखट पर दोनों हाथ टेककर बिना आवाज किए ठाकुर साहब के कमरे में कूद गए।···

ज्वाला प्रसाद अपने कमरे में आए तो कौशल्या सो रही थी···ज्वाला प्रसाद का पूरा शरीर पसीने से भीग रहा था···शरीर में कम्पन्न थी और साँस भी फूली हुई थी···उन्होंने कंपकंपाते हाथों से कौशल्या का कन्धा पकड़कर हिलाया और धीरे-धीरे उसे पुकारने लगे—

'कौशल्या···कौशल्या···।'

कौशल्या ने आँखें खोलकर अजनबियों के समान ज्वाला प्रसाद को देखा···फिर हड़बड़ा कर उठ बैठी और ज्वाला प्रसाद को इस दशा में देखकर बौखलाई हुई बोली—

'क्या हुआ ? यह तुम्हारी हालत क्या हो रही है ?'

'शि···श···!' ज्वाला प्रसाद ने होंठों पर उंगली रखकर कहा, 'धीरे बोलो···कोई जाग गया तो अच्छा नहीं होगा।'

'म···म···मगर बात क्या है ?'

'वह···म···म···मर गए।'

'कौन ?'

'ठाकुर साहब।'

'क्या···?' कौशल्या उछल पड़ी, 'मर गए ?'

'अरे···धीरे बोल···।'

'लेकिन कैसे मर गए ? शाम तक तो ठीक थे···हमारे साथ ही खाना खाया था उन्होंने—।'

'सुबह तक भी ठीक ही रहते···लेकिन मैंने उन्हें मार डाला।'

'तुमने मार डाला···!!'

कौशल्या बौखला कर खड़ी हो गई—ज्वाला प्रसाद ने कहा—

'हाँ···अगर मार न डालता तो कल तक हम यहाँ से निकाल दिए जाते।'

'क्यों ?' कौशल्या की आवाज काँप रही थी।

'तुम्हारे सपूत के कारण···।'

ज्वाला प्रसाद ने सारी घटना सुनाई और बोले—

'अगर ठाकुर साहब जिन्दा रहते तो वह हमें हर हालत में निकाल बाहर करते···फिर मुझे उनकी फर्म में नौकरी भी न मिलती—और समझ लो कि तुम्हारी तीनों बेटियां कुंवारी बैठी रहतीं—'

कौशल्या भौंचक्का-सी आंखें फाड़े ज्वाला प्रसाद को देखती रह गई···फिर कांपती आवाज में बोली—

'ल···ल···लेकिन किसी को पता चल गया तो ?'

'किसी को पता नहीं चलेगा—सब जानते हैं कि ठाकुर साहब दिल के रोगी थे···मैंने उनके मुंह पर तकिया रखकर उनकी साँस रोक दी थी···थोड़े से ही दबाव से उनका हार्ट फेल हो गया···सब यही समझेंगे कि ठाकुर साहब सोए-सोए ही दिल के दौरे के कारण मर गए।'

'लेकिन क्या केवल ठाकुर साहब के मर जाने से ही समस्या हल हो गई ?'

'क्या मतलब ?'

(शेष आगामी अंक)
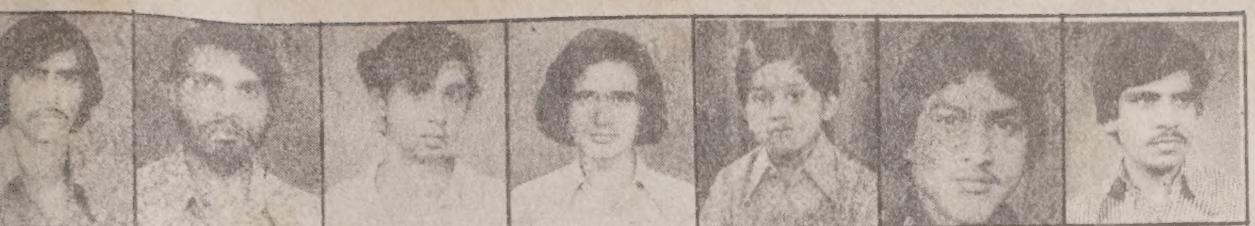
...ह 'घायल परवाना', ...राबंकी (उ० प्र०), ...गप्प मारना, एक ...लड़वाना, चालाकी ...लेना।

रमेशचंद्र भ्रार० तागडे, १५८ अमीबे के पास, चदन नगर, नागपुर, २६ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, डाक टिकिट संग्रह करना, खेलना।

श्री खुशालचंद बी० राठोर 'खुश' द्वारा - कुशाल लायब्रेरी जनता सेल मिल के पास रेलटोली गोंदिया भंडारा, २१ वर्ष, नौकरी करना।

वरीन्दर कुमार कोसला, श्री भ्रार० एम० कोसला, जनता नगर लुधियाना, १९ वर्ष, क्रिकेट खेलना, हंसना और सबको हंसाना।

भ्रालोक भलभूनवाला १७ ईजरा स्ट्रीट कलकत्ता, १० वर्ष, कहानी की किताब पढ़ना, काम बढ़ाना, भ्रावारा घूमना-फिरना।

घनश्याम पी० भ्रासुदानी, जरीपटका महात्मा गांधी स्कूल के सामने, रेशनींग, २० वर्ष, फिल्में देखना तथा दीवाना पढ़ना।

बिनय कुमार बेरी, काटेज इन्डस्ट्रीज एसोसियेशन जलियांवाला बाग रोड, भ्रमृतसर, २८ वर्ष, जीनत भ्रमान की फोटो इकट्ठी करना।

...कुमार भ्रग्रवाल, लोहा ...बैंक रोड, चन्दौसी ...बाद, १४ वर्ष, पत्र-...करना, डाक टिकट ...रना।

जहूरभुज ए० बजाज, शिव गुड़ भंडार इतवारा बाजार, भ्रमरावती, २६ वर्ष, दीवाना पढ़ना, पत्र मित्रता करना व नई फिल्में पहले दिन देखना।

सुधीर गोस्वामी, ९/१ शिवब नगर, आगरा, १७ वर्ष, क्रिकेट खेलना, स्टेम्प कलकशन, पत्र मित्रता करना, दीवाना पढ़ना।

रिजवान भ्रहमद नियाजी, १४/६६, कम्मू टोला, हास्पिटल रोड भ्रागरा-३, १४ वर्ष, क्रिकेट खेलना, टिकट संग्रह करना, दीवाना पढ़ना।

नीरज भ्रग्रवाल, १२३, माडल हाऊस, लखनऊ, १७ वर्ष, क्रिकेट खेलना, पत्र-मित्रता करना, दीवाना पढ़ना, घूमना-फिरना।

रंजन कुमार वर्मा द्वारा डा० देवनाथ प्रसाद, प्रभारी चिकित्सा पाधिकारी, बरारी राजकीय चिकित्सालय, कटिहार, १८ वर्ष, दीवाना पढ़ना।

भ्रर्जुन बठेजा 'भ्रकेला' १६/३५ बी, तिलक नगर, नयी दिल्ली-११००१८, २१ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, भ्रध्ययन व गप्पें हांकना।

...सिंह भमरा, सचिव-...रेडियो श्रोता संघ, ...बी० बी० सिंह. जैन ...चाईबासा-८३३२०१, ...वं, पत्र मित्रता करना।

विजय कृष्ण प्रसाद, कमरा नम्बर १८, राइटर्स होस्टल चिकित्सा महाविद्यालय, दरभंगा, पत्र-मित्रता करना व फिल्म देखना।

सुधीर ग्रोवर 'भ्रकेला', भ्राकुन बाजार, लुधियाना, (पंजाब), २० वर्ष, पत्र-मित्रता, सिक्के इकट्ठे करना, फर्माइश भेजना।

राजेन्द्र सिंह, ६० पंचवटी, 'भ्रनुराग' उदयपुर (राज०), १६ वर्ष, क्रिकेट खेलना, सिनेमा देखना, घूमना तथा मोटर चलाना।

संजय कुमार, सेन्ट्रल होटल एण्ड रेस्टोरेन्ट ६५ जीरो रोड, इलाहाबाद, १७ वर्ष, निशानेबाजी करना, क्रिकेट खेलना।

कवि पदमाकर बागडे, प्रस्तुत निरीक्षक निर्देशक, (भ्राई. एम. डी.) इन्दौर चौकी माडल टाउन नागपुर, १६ वर्ष, सैर करना।

प्रदीप वाल्टर द्वारा एम० वाल्टर (लाइन मैन), पोस्ट मंडावर, बिजनौर, (उ०प्र०), १८ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, घूमना भ्रादि।
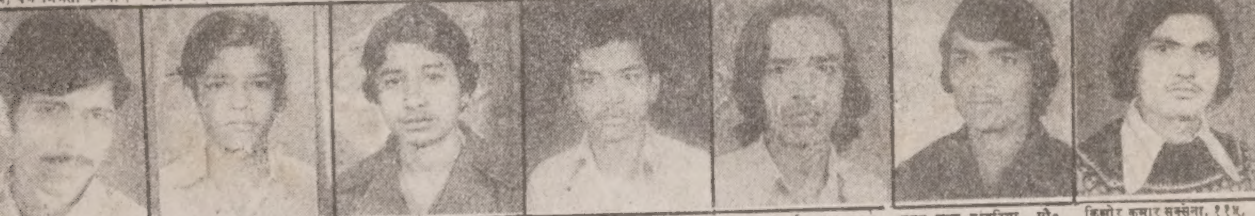
...नाथ शुक्ला 'भ्रमेठ' ...ता० राज मोहल्ला ...र, २३ वर्ष, बाजे सुनना, ...ती लिखना, बाजार में ...।

...कुमार शर्मा, 'पंकज' ...ल्लापुरा मंदिर के ...तीर, १४ वर्ष, पत्र-...करना, नये-नये दोस्त ...।

शिव कुमार शर्मा पुत्र नरोत्तम राम, भ्रपर रघुनाथपुर कल्लू (हि. प्र.) १६ वर्ष, क्रिकेट खेलना, सिनेमा देखना भ्रौर दूसरों को खिलाना।

राकेश कुमार भ्रग्रवाल पुत्र मुरलीधर भ्रग्रवाल, मोहल्ला ठाकुर, बागपत (मेरठ), १६ वर्ष, खेलना, पिक्चर देखना, पढ़ना।

श्याम रामनानी, ५६, जवाहर नगर, उदयपुर, १६ वर्ष, लक्ष्मी मशीन चलाना, फिल्में देखना, दूसरों की सेवा करना तथा खुश रहना।

कवर लाल सांवरिया, मो० तलाई प्रताप गढ़, (राज०), १८ वर्ष, पत्र-व्यवहार करना, फोटोग्राफी करना, पढ़ना भ्रौर व्यायाम करना।

किशोर कुमार सक्सेना, ११५, गोविन्द देव, खुरजा शहर (यू० पी०), १६ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, फिल्में देखना, फोटोग्राफी।

...एम. २/४६ दयाबस्ती ...रोहतक रोड, नई दिल्ली, ...वर्ष कहानी लिखना, ...म निर्देशक बनना, मित्रता ...ना।

संजय श्रीवास्तव, भ्राफिसर कालोनी सहारनपुर (यू.पी.), १५ वर्ष, जासूसी करना, पत्र-व्यवहार करना, तालाब में तैरना।

इवीन्द्र शर्मा, श्री शिव मंदिर मोहल्ला लाल बाग, पटियाला, १५ वर्ष, पढ़ाई लिखाई करना, बड़ों का भ्रादर करना, भ्रखबार पढ़ना।

भ्राबिद भ्रली जिवी, ७ सैयद साली लेन कलकत्ता, १८ वर्ष, पढ़ना, फुटबाल खेलना, बगीचा में जाकर सुबह को टहलना।

सत्यरंजन पंडा, क्वा० नम्बर ए-६६, बजराज नगर उड़ीसा, २२ वर्ष, गधों के कान पकड़ कर चढ़ना, सिर के बल खड़े होकर पढ़ना।

हमारा पता : दीवाना-८-ब बहादुरशाह ज़फ़र मार्ग नई दिल्ली-११०००२

कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।

नाम ________ पता ________ आयु ________ शौक ________

दीवाना फ्रैंडस क्लब

दीवाना फ्रैंडस क्लब के मेम्बर बन कर इस फंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिए जिसे दीवाना तेज साप्ताहिक में प्रकाशित कर दिया जायेगा। लिफाफे के कोने पर 'पेन फ्रेन्ड' लिखना व फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।

...प्रैस, नया बाजार, दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिए पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित। प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता।

साप्ताहिक भविष्य

पं० [illegible] शर्मा ज्योतिषी कुसुम दैवज्ञ
सुपुत्र [illegible] हंसराज शर्मा

५ अक्तूबर से ११ [illegible]र ७८ तक

मेष : शुभफलों से युक्त होने पर भी यह सप्ताह संघर्षमय रहेगा, कामकाज में व्यस्तता बढ़ जावेगी, यात्रा अचानक हो, कोई काम बनते-बनते रह जावेगा, परिवार से सुख, झगड़ा बिना कारण होगा।

वृष : यह सप्ताह पर्याप्त अच्छा रहेगा, प्रयास करते रहें सफलता भी मिल जावेगी, शत्रु सामना न कर सकेंगे, व्यय बढ़ेगा, कोई अप्रिय घटना देखने में आवेगी, कारोबार ठीक चलेगा।

मिथुन : आर्थिक तथा व्यापारिक दृष्टिकोण से यह सप्ताह लाभप्रद रहेगा, व्यय यथार्थ और आय में वृद्धि होगी, कामकाज की स्थिति भी सुधरेगी, मानसिक चिन्ता बिना कारण ही, क्रोध भी बढ़ेगा।

कर्क : यह सप्ताह विशेष अच्छा नहीं है, विरोधी अपना प्रभाव बढ़ाएंगे या गुप्त रूप से हानि पहुंचाने की कोशिश करेंगे, किसी प्रभावशाली पुरुष का सहयोग मिलेगा, कारोबार में यथार्थ लाभ होगा।

सिंह : शुभाशुभ मिश्रितफलों से युक्त सप्ताह है, परेशानी का कोई न कोई कारण बना ही रहेगा, किसी-किसी समय धन की कमी महसूस होगी, फिर भी आपके काम बनते रहेंगे।

कन्या : आर्थिक दृष्टि से सप्ताह ठीक ही रहेगा फिर भी किसी-किसी समय तंगी महसूस होती रहेगी, स्वभाव में गुस्सा बिना कारण ही रहेगा, शत्रु सामना न कर पावेंगे, घरेलू सुख अच्छा मिलेगा।

तुला : कारोबारी क्षेत्र में कुछ परेशानियां तो आवेंगी परन्तु लाभ अच्छा होगा और ठीक समय द्रव्य भी मिलता रहेगा, व्यय अधिक और नई वस्तुओं की खरीद पर होगा, किसी प्रियजन से मिलाप होगा।

वृश्चिक : पिछले सप्ताह की तुलना में यह सप्ताह कुछ अच्छा रहेगा, प्रारम्भ में उलझनें बढ़ेंगी परन्तु बाद में स्वयं ही दूर हो जावेंगी, जल्दबाजी में कोई भी कदम न उठाएं तो अच्छा है।

धनु : कई तरह के संघर्षों से यह सप्ताह बीतेगा समस्याएं भी काफी बढ़ जावेंगी, क्रोध एवं मानसिक परेशानी बनी रहेंगी, फिर भी भाग्य आपका साथ देगा जिससे कुछ कामों में सफलता मिलेगी।

मकर : सप्ताह पर्याप्त अच्छा है, कुछ संघर्ष आयेंगे और अपने आप ही समाप्त हो जावेंगे, कामकाज में व्यस्तता और लाभ भी बढ़ेगा, प्रयत्न करने पर कामों में सफलता मिलेगी, परिवार से सुख मिलेगा।

कुम्भ : इन दिनों संघर्षपूर्ण हालात का सामना करना होगा, परिश्रम होने पर भी सफलता कुछ देर से या आशा से कम मिलेगी, घरेलू एवं कारोबारी योजनाओं पर व्यय बढ़ेगा।

मीन : परिश्रम अधिक, व्यर्थ के कामों पर समय अधिक खराब होगा, सप्ताह में परेशानियां घटती बढ़ती रहेंगी, अजनबी लोगों से बचें, धार्मिक कामों में रुचि, कामकाज ठीक चलेगा।
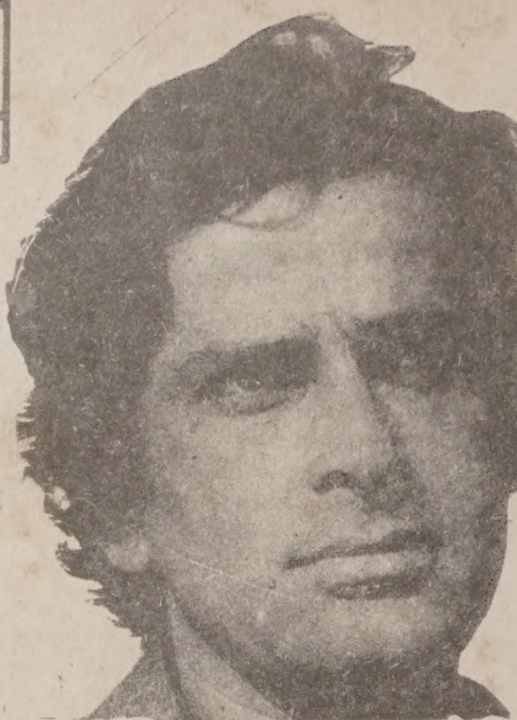
शशि कपूर

विजय भारद्वाज

शशि कपूर का जन्म १८ मार्च सन १९३८ में हुआ। इन्होंनें मैट्रिक तक शिक्षा प्राप्त की है। इनकी प्रथम फिल्म थी 'आवारा' जिसमें इन्होंने बाल भूमिका निभाई थी। लगभग बारह वर्षों से लगातार नायक के रोल निभाने वाले शशि कपूर के पास आज बेशुमार फिल्में हैं। आज फिल्म जगत में यह व्यस्त कलाकार हैं। हिन्दी फिल्मों के अतिरिक्त इन्होंने अंग्रेजी फिल्मों में भी भूमिका निभाई।

एक जमाना था जब शशि कपूर लगभग हर नायिका के साथ पर्दे पर दिखाई देता था चाहे आशा पारिख हो या शर्मिला टैगोर नन्दा हो या माला सिन्हा।

हालांकि आज उन अभिनेत्रियों का जमाना बीत चुका है। उस समय की अधिकांश हीरोइनें अपना गृहस्थ जीवन गुजार रही हैं, लेकिन शशि कपूर आज भी सदाबहार हीरो बना हुआ है।

शशि कपूर आज हर दूसरे दिन एक फिल्म साइन करता है जिसे देखकर उन पर सचमुच आश्चर्य होता है। शशि कपूर की पिछली हिट फिल्मों पर यदि नजर डाली जाये तो पता चलता है कि 'धर्मपुत्र', 'वक्त', 'प्यार किये जा', 'जब जब फूल खिले', 'हसीना मान जायेगी', 'जहां प्यार मिले', 'शर्मीली', 'चोर मचाये शोर', 'रोटी कपड़ा और मकान', 'जंजीर', 'दीवार', कभी-कभी 'त्रिशूल', 'अतिथी' सभी फिल्में एक से बढ़कर एक रहीं।

हाल ही में प्रदर्शित फिल्म 'सत्यम शिवम सुन्दरम' में भी शशि कपूर ने बेजोड़ अभिनय प्रदर्शन किया है। यह अलग बात है कि फिल्म बाक्स आफिस पर पिट गई।

अब शशि कपूर अपनी पत्नी जैनिफर के साथ भी एक फिल्म में दिखाई देंगे। इन का पारिवारिक जीवन बेहद सुखद है! इन का स्वास्थ्य बहुत ही मृदु है। घर में यह शूटिंग की बात र[illegible]ें करते और बच्चों के साथ पूरा सम[illegible]ीत करते हैं। अब इन्होंने तीन-तीन [illegible] काम करना भी छोड़ दिया है। जैसे-[illegible] यह लोकप्रियता प्राप्त करते जा रहे हैं वैसे-वैसे ही यह अच्छी फिल्मों की तरफ [illegible]ान दे रहे हैं। इन्होंने अब यह निर्णय कर लिया है कि केवल अच्छी फिल्में ही साइन करेंगे, हर आलतू फालतू फिल्म नहीं पकड़ेंगे। फिल्म 'जनून' में इनका विशेष रोल है इसके अतिरिक्त अन्य फिल्में भी हैं जो अपने आप में बेमिसाल हैं और पूर्णतया की ओर हैं।

एटलस एपार्टमैन्ट हाकिस रोड,
बम्बई—४०००२६